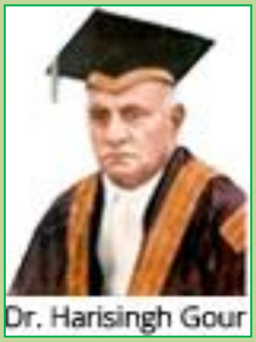

न्यूजलेटर

अप्रैल 2024

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

संरक्षक
प्रो. नीलिमा गुप्ता
कुलपति
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.)

सहयोग एवं परामर्श
डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय
कुलसचिव (प्र.)

संपादक
डॉ. विवेक जायसवाल
जनसंपर्क अधिकारी (प्र.)

संपादक सदस्य
डॉ. हेमंत पाटीदार
डॉ. आशुतोष
डॉ. शालिनी चोइथरानी
डॉ. संजय शर्मा
माधव चंद्रा

विश्वव्यापी कोविड संकट ने दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा के महत्त्व को और अधिक प्रासंगिक बनाया – प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

सागर, 1 अप्रैल, 2024 को ‘मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम में नवाचार एवं परिप्रेक्ष्य’ विषय पर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान, नोयडा एवं कामनवेल्थ एजुकेशन मीडिया सेंटर फार एशिया के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन का आयोजन राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान, नोयडा के क्षेत्रीय केंद्र में स्थित कल्याण सिंह सभागार में आयोजित किया गया. उपरोक्त कार्यक्रम में से विशिष्ट वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलगुरु प्रो नीलिमा गुप्ता ने भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की बुनियादी अवधारणा एवं उपादेयता को स्पष्ट करते हुए कहा वर्ष 2024 में

दूरस्थ शिक्षा की विश्व रैंकिग में भारत का तीसरा स्थान है. इस क्षेत्र में कई भारतीय राज्यों ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है उनमें केरल एवं आंध्र प्रदेश जैसे राज्य अग्रणी है, जिसमें आंध्रप्रदेश ने सबसे पहले आंध्रप्रदेश में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की. आज अधिकतम राज्यों में दूरस्थ शिक्षा हेतु विभिन्न संस्थान अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहे है. जिसमें डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर भी अपने दूरस्थ शिक्षा संस्थान, शिक्षा की मुख्य धारा से वंचित विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं व्यवसायिक उन्नयन हेतु 5 से अधिक ज्ञाननुशासनों में अध्ययन-अध्यापन का कार्य किया जा रहा है. विश्वव्यापी कोविड संकट के समय ने हमें दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा के महत्त्व को और अधिक प्रासंगिक बना दिया. जिससे शिक्षक और छात्रों ने एक नई तरह की

तकनीकों के माध्यम से अपना अध्ययन-अध्यापन का कार्य किया. आगे उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के डिजिटल इंडिया मिशन के मूल उद्देश्यों को साकार करने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे जी द्वारा डिजिटल नवाचारों का भी

जिक्र किया. साथ ही देश की सेवा में रत अपने सैनिकों के शैक्षिक उत्थान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं महार रेजिमेंट के साथ ही साथ अग्निवीर सैनिकों, केंद्रीय जेल में सजा काट रहे कैदियों के लिए दूरस्थ शिक्षा में नए पाठ्यक्रमों के संचालन हेतु किये गए अकादमिक समझौतों से विश्वविद्यालय एवं सैनिकों को मिलने वाली सुविधाओं की भी चर्चा की. इस अवसर पर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान, नोयडा की अध्यक्ष, प्रोफेसर सरोज शर्मा, तेजपुर विश्वविद्यालय, असम के कुलगुरु प्रो. शम्भू नाथ सिंह, CEMCA के निदेशक, डॉ. बशीर अहमद, एनईटीएफ के अध्यक्ष प्रोफेसर अनिल डी. सहस्रबुद्धे, सीवीईटी के अध्यक्ष आईएएस (सेवानिवृत्त) डॉ. निर्मल सिंह कालसी उपस्थित रहे, कार्यक्रम में तथा सीओएल, कनाडा के अध्यक्ष प्रो. पीटर स्कॉट और निदेशक (शिक्षा) डॉ. टोनी मेस वर्चुअल माध्यम से जुड़े रहे.

राष्ट्रीय युवा उत्सव में विश्वविद्यालय ने सात चयनित विधाओं में से सभी में स्थान प्राप्त कर अभूतपूर्व सफलता अर्जित की

राष्ट्रीय युवा उत्सव लुधियाना में डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. ने 7 विधाओं में पदक प्राप्त किए

पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी लुधियाना में 28मार्च से 1 अप्रैल तक पांच दिवसीय 37 वां अंतर्विश्वविद्यालयीन राष्ट्रीय युवा उत्सव अयोजित हुआ, जिसमें पूरे देश से लगभग 116 विश्वविद्यालयों के छात्र छात्राओं ने लगभग 28 विधाओं में सहभागिता की. संगीत विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर एवं डॉ. राहुल स्वर्णकार के मार्गदर्शन में तैयार संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने संगीत की विधाओं के अंतर्गत एकल सुगम गायन, एकल बांसुरी वादन, समूह लोक वाद्य वादन में स्थान प्राप्त किया. नाट्य दल ने डॉ. राकेश सोनी के मार्गदर्शन में प्रहसन (स्किट) में जीत दर्ज की. दल प्रभारी यश गोपाल श्रीवास्तव के नेतृत्व में वि.वि. के दल ने 30 विजयी छात्र छात्राओं की सहभागिता हुई. जिसमें संगीत की विधाओं के अंतर्गत समूह फोक ऑर्केस्ट्रा में गगन, संजय, ओम, पंकज, मैकलीन, गोलू , यश, विधान, शुभम, रिद्धि, प्रांजलि, देवेंद्र ने तृतीय स्थान, एकल स्वर वाद्य (बांसुरी) में पंकज ने तृतीय स्थान, सुगम गायन में स्तुति ने तृतीय स्थान, नाटक विधा के

अंतर्गत प्रहसन (स्किट) में अर्पित, संजय, अनुज, देवव्रश, दीपेंद्र, अनुराग ने तृतीय स्थान, लोक नृत्य में बधाई को द्वितीय स्थान मिला जिसमे छात्र देववृष, अमन, अनुराग, ऋषभ, राहुल, अपर्णा, अनन्या, अमिता, प्रांजलि, प्रियांशी शामिल रहे.

रंगोली में ललित ने तृतीय एवं इंस्टालेशन में कृष्णा, गगन चौधरी, ललित ने भी तृतीय स्थान प्राप्त किया इसके अलावा सांस्कृतिक रैली में 116 विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान अर्जित किया. वि.वि के सांस्कृतिक समन्वयक डॉ राकेश सोनी ने बताया कि इस उपलब्धि के लिए सभी छात्रों ने दिन रात मेहनत की है और राष्ट्रीय स्तर पर सात चयनित विधाओं में से सभी में जीत कर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है. विद्यार्थियों की उपलब्धियों पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, अधिष्ठाता प्रो. दिवाकर राजपूत, संगीत विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार, ललितकला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग अध्यक्ष प्रो. ऋतु यादव ने हर्ष जताया है.

डेटा आधारित शोध ही वर्तमान में प्रासंगिक – प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय में डेटा "डेटा डायलॉग" कार्यशाला आयोजित

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता द्वारा "डेटा डायलॉग" कार्यशाला एवं "ज्ञान समृद्धि कार्यशाला के पोस्टर का विमोचन किया गया. कुलपति ने इस नवाचार को निरंतर बढ़ाने का आवाहन करते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रयासों से विश्वविद्यालय की शोध परक गतिविधियों को नया आयाम दिया जा सकेगा.

विश्वविद्यालय स्थित जनसंख्या अनुसंधान केंद्र, सागर द्वारा दिनांक 4 अप्रैल को "डेटा डायलॉग" कार्यशाला आयोजित की गई. इस कार्यशाला के माध्यम से केंद्र की शोध गतिविधियों हेतु एकत्रित डेमोग्राफिक एवं स्वास्थ्य डेटा की जानकारी इस कार्यशाला में उपस्थित फेकल्टी एवं शोधार्थियों को दी गई.

कार्यशाला में जनसंख्या अनुसंधान केंद्र के निदेशक प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज द्वारा इस डेटा डायलॉग की आवश्यकता को रखांकित करते हुवे कहा कि इस केंद्र द्वारा विभिन्न शोध प्रोजेक्ट्स हेतु एकत्रित डेटा को विश्वविद्यालय के अन्य विभागों की शोध गतिविधियों के परिप्रेक्ष्य देखने की आवश्यकता है.

कार्यशाला में केंद्र की सहायक निदेशक डॉ. रीना बासु द्वारा बताया कि केंद्र की डेटा एकत्रित करने की प्रविधियों को विभिन्न शोध प्रोजेक्ट्स के विषय को ध्यान में रखते हुवे निरंतर अद्यतन किया जाता है. केंद्र द्वारा देश में स्थित अन्य पी.आर.सी. के साथ मिलकर देशव्यापी शोध भी किये जा रहे हैं. इस प्रकार के शोध प्रोजेक्ट्स के डेटा द्वारा विभिन्न स्तरों पर डेमोग्राफिक एवं स्वास्थ्य की स्थिति में बदलाव का विश्लेषण किया जाना संभव है. डॉ. निखिलेश परचुरे, शोध अन्वेषक द्वारा बताया गया कि शोध के प्रारम्भ करने की पूर्व भी डेटा की प्रमाणिकता, पूर्णता और सामयिकता के बारे में शोधार्थियो को प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है. उपलब्ध डेटा को शोध के लिए उपयोग करने के पूर्व इसके बारे में पूर्ण जानकारी जैसे डेटा कब, किसके द्वारा, कहाँ से और कैसे एकत्रित किया गया, होना आवश्यक है. प्रत्येक एकत्रित डेटा का मेटा डेटा भी उपलब्ध होना महत्वपूर्ण है. मेटा डेटा के माध्यम से डेटा के बारे में कई महत्वपूर्ण सूचंनाए प्राप्त होती है जो डेटा के उपयोग करते समय सहायक होती है. इस कार्यशाला में निदेशक फेकल्टी अफेयर प्रोफेसर अजित जायसवाल तथा निदेशक अकादमिक गतिविधि प्रोफेसर नवीन कांगो तथा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक विभागों से फेकल्टी तथा शोधार्थियों ने डेटा की उपलब्धता और उसके शोध कार्य हेतु उपयोग के बारे में अपने विचार रखे.

उपलब्धि: फार्माकोलॉजी रिसर्च में विश्वविद्यालय देश भर में टॉप 10 में, अन्य विषयों में भी अग्रणी

नूतन एवं नवाचारी ज्ञान में किए जा रहे शोध ने दी विश्वविद्यालय को नई ऊंचाई

एडुरैंक संस्था ने जारी की वर्ष 2024 की रैंकिंग सूची

सागर. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर को विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों में अग्रणी रैंकिंग मिली है. एडु रैंक संस्था द्वारा देश भर के शैक्षणिक संस्थाओं की वर्ष 2024 की रैंकिंग जारी की गई है. एडु रैंक एक स्वतंत्र संस्था है जो 183 देशों की शैक्षणिक संस्थाओं की रैंकिंग को जारी करती है. इस रैंकिंग में विश्वविद्यालय का रिसर्च पब्लिकेशन और साइटेशन के आधार पर रिसर्च आउटपुट, प्रशासनिक प्रतिष्ठा एवं ख्यातिनाम एलुमनाई के प्रभाव जैसे मानकों को शामिल किया गया है. इस रैंकिंग में विश्वविद्यालय में हो रहे शोध एवं अनुसंधान के 78 विषयों को शामिल किया गया है जिसमें 50 प्रतिशत से अधिक टॉप स्कोर मिला है.

एडुरैंक संस्था द्वारा अलग-अलग अध्ययन क्षेत्रों के अंतर्गत उपविषयों में होने वाले शोध एवं प्रकाशन को मानक मानते हुए रैंकिंग की गई है. बायोलॉजी अनुशासन में फार्माकोलॉजी से संबंधित अध्ययन एवं शोध में विश्वविद्यालय ने टॉप 10 में जगह बनाई है. बायोटेक्नोलॉजी विषय में देश भर में 17 वीं रैंकिंग है. इसी तरह बायोमेडिकल इंजीनियरिंग से संबंधित अध्ययन एवं शोध में देश भर में 25वीं और नैनो टेक्नोलॉजी 33वीं रैंकिंग है.

इसके अलावा जिन विषयों में अच्छी रैंकिंग हैं उनमें बायो इन्फॉर्मैटिक्स एंड काम्प्यूटेशनल बायोलॉजी में देश भर में 16वीं, वायरोलॉजी में 22वीं, बायोफिजिक्स में 26 वीं, कॉसमेटोलॉजी में 13वीं, साइकियाट्री में 18वीं रैंकिंग हासिल हुई है. केमिकल इंजीनियरिंग, माइक्रोबायोलॉजी, एन्टोमोलोजी, ऑनकोलॉजी एंड कैंसर रिसर्च, न्यूरोसाइंस, जेनेटिक्स, रेडिएशन थेरेपी, प्लास्टिक सर्जरी, इम्यूनोलॉजी, एनेस्थीसियोलॉजी जैसे क्षेत्रों में शोध के लिए देश भर में टॉप 50 में जगह मिली है.

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि अकादमिक शोध एवं अनुसंधान के स्तर पर विश्वविद्यालय लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है. विश्वविद्यालय में हो रहे अंतरानुशासनिक एवं नवाचारी शोधों से विविध ज्ञान क्षेत्रों में विश्वविद्यालय की उपस्थिति दर्ज हो रही है. शोध के कुछ नए पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किए गए हैं, साथ ही कई परियोजनाएं भी चल रही हैं. आगामी दिनों में विश्वविद्यालय अन्य सभी विषयों एवं क्षेत्रों में प्रत्येक रैंकिंग मानक को पूरा करते हुए श्रेष्ठतम रैंकिंग हासिल करेगा.

मेरा पहला वोट देश के लिए विषय पर किया नुक्कड़ नाटक

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं युवा खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा शहीद दिवस की श्रृंखला में स्वच्छता कार्यक्रम एवं मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है. जिसका उद्देश्य

चुनावी प्रक्रिया में मतदाताओं की भागीदारी के माध्यम से राष्ट्रीय विकास को बढ़ाना है. जिसके अंतर्गत विश्वविद्यालय राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने विश्वविद्यालय के समीप स्थित गांव पथरिया में दिनांक 7 अप्रैल को आपका वोट आपका अधिकार को लेकर मतदान जागरूकता रैली पथरिया गांव में निकाली गई तथा मतदाता जागरूकता से संबंधित" मेरा पहला वोट देश के लिए" अभियान पर आधारित नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया. जिसका उद्देश्य पहली बार वोट देने वाले नागरिकों, महिलाओं, बुजुर्गों एवं दिव्यांगो को उनके वोट देने के अधिकारो को शामिल करते हुए मतदान करने के उद्देश्य से प्रेरित करना तथा एक बेहतर लोकतंत्र के निर्माण में अपनी भूमिका को निभाना था. कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्वयंसेवकों ने सहभागिता की.

शोधार्थियों में रोज़गार परक शोध कौशल संबर्द्धन आवश्यक - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग में "ज्ञान समृद्धि" कार्यशाला आरम्भ

जनसंख्या अनुसंधान केंद्र एवं भूगोल विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हो रही तीन दिवसीय "ज्ञान समृद्धि" कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया. उन्होंने कहा कि आज अकादमिक ज्ञान के साथ साथ नियोक्तापरक आवश्यकतों को ध्यान में रख कर भी हमें शिक्षा में रोजगार परक कौशल संबर्द्धन करना होगा. उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा की आज के शोधार्थियों और विद्यार्थियों को बहुमुखी प्रतिभा विकसित करनी होगी तब कही वो इस प्रतिस्पर्धा के युग में स्वयं को योग्य साबित कर सकेंगे. उन्होंने कहा कि विगत दिनों में विश्वविद्यालय के जनसंख्या अनुसंधान केंद्र की शोध गतिविधियों के बारे में अंतर्विभागीय बैठक के बाद तत्परता से विश्वविद्यालय में "डेटा डायलॉग" एवं "ज्ञान समृद्धि" कार्यशालाओं को आयोजित किया जाना इस बात का संकेत है कि

हमारे विश्वविद्यालय का जनसंख्या अनुसंधान केंद्र न केवल अपने शोध से देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, अपितु नये आयामों पर शोध की निरंतरता की दृष्टी से मानव संसाधन विकसित करने की भी पहल कर रहा है.

कुलपति ने शोधार्थियों से इस कार्यशाला के माध्यम से नये विषयों को समझने और उनके बारे में शोध की संभावनाओं पर गहन विमर्श करने का सुझाव दिया. उन्होने भारत की समृद्धि और विकास हेतु अपने शोध पर ध्यान देने को कहा. पी.आर.सी.

के समृद्ध डेटा संग्रह को अन्य विभागों से साझा करने के प्रयास को निरंतरता देने के उद्देश्य से इस प्रकार के कार्यक्रमों की आवश्यकता जताई. उन्होने भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज को इस कार्यक्रम को मूर्त रूप देने के प्रयासों की भी सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा लिए जा रहे नवाचारों का लाभ विश्वविद्यालय की अंतर्विभागीय शोध गतिविधियों को और सफल बनाएगा. उन्होंने कहा की सागर विश्वविद्यालय में संसाधनों की कमी नहीं हैं परन्तु उन्हें विद्यार्थी हित में और उनके उज्जवल भविष्य के लिए समुचित रूप में उपयोग किये जाने की आवश्यकता है. हमारा विश्वविद्यालय निश्चय ही सफलता के और उच्च मुकाम हांसिल करेगा.

भूगोल विभाग के अध्यक्ष एवं जनसंख्या अनुसंधान केंद्र के निदेशक प्रोफेसर विनोद भरद्वाज ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि इस तीन दिवसीय कार्यशाला में स्वास्थ्य एवं जनसंख्या नीति, जनसंख्या के विभिन्न घटकों में परस्पर संबंधों और उनका अन्य सामाजिक परिस्थितियों पर प्रभाव के विश्लेषण के बारे में केंद्र द्वारा किये गए राष्ट्रीय स्तर के शोध अध्ययन जिनमें असंचारी रोग, किशोर स्वास्थ्य, स्वास्थ्य अधोसंरचना तथा स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता से संबंधित शोध अध्ययनों के बारे में जानकारी दी जाएगी. इस कार्यशाला में जनसंख्या एवं सामाजिक आँकड़ों की शोध के लिये उपलब्धता, डेटा स्त्रोतों एवं डेटा ट्राएंगुलेशन के बारे में विस्तार से बताया जाएगा. इस कार्यशाला के माध्यम से प्रतिभागी शोधार्थी अपने शोध को और अधिक परिष्कृत कर सकेंगे. इसका उपयोग निश्चित रूप से देश के सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक एवं गुणात्मक विकास हेतु हो सकेगा.

प्रोफेसर भारद्वाज ने बताया कि विश्वविद्यालय में भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा स्थापित यह केंद्र विगत 23 वर्षों से मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार राज्यों तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य एवं इससे जुड़े मुद्दों पर शोध कर रहा है. केंद्र द्वारा मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यों के सभी जिलों में शोध अध्ययन, मॉनिटरिंग एवं सर्वेक्षण किये गये है. केंद्र के द्वारा विश्वविद्यालय के शोधर्थियों एवं स्नातकोत्तर छात्रों को शोध के नये आयामों में शोध दक्षता विकसित करने के उद्देश्य से तीन दिवसीय "ज्ञान समृद्धि" कार्यशाला की श्रंखला आयोजित करने के क्रम में दिनांक 8-10 अप्रैल तक यह कार्यशाला भूगोल विभाग में आयोजित की जा रही है. इसमें कुल 52 विद्यार्थी सम्मिलित हो रहे हैं.

इस कार्यक्रम में अतिथि के रूप में विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. श्रीकमल शर्मा तथा प्रो. संतोष शुक्ला ने पी.आर.सी. की स्थापना से लेकर अब तक किये गये प्रयासों की सराहना की. प्रो. शुक्ला ने पी.आर.सी., सागर के प्रथम दशक में किए गए

शोध संग्रह को अपनी तरह का प्रथम प्रयास बताते हुए इसे निरंतर बनाए रखने के महत्व को रखांकित किया. प्रो. शर्मा ने पी.आर.सी में किए जा रहे शोध का देश की नीति निर्धारण में योगदान को महत्वपूर्ण बताया.

कार्यक्रम में शोधार्थियों एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के अतिरिक्त अधिष्ठाता व्यावहारिक अध्ययनशाला प्रो. देवाशीष बोस, राजनीति विज्ञान की नव नियुक्त विभागाध्यक्ष प्रो. अनुपम शर्मा, भूगोल विभाग के सभी फैकल्टी, जनसंख्या अनुसंधान केंद्र के डॉ. निखलेश परचुरे, डॉ. ज्योति तिवारी एवं अन्य सदस्य उपस्थित रहे. कार्यक्रम का संचालन इस कार्यशाला के समन्वयक डॉ. हेमन्त पाटीदार ने किया, तथा डॉ. आर. बी. अनुरागी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया.

मतदान से ही लोकतंत्र की मजबूती : प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं युवा एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा शहीद दिवस की श्रृंखला में स्वच्छता कार्यक्रम एवं मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है. जिसका उद्देश्य

चुनावी प्रक्रिया में मतदाताओं की भागीदारी के माध्यम से राष्ट्रीय विकास को बढ़ाना है. जिसके अंतर्गत विश्वविद्यालय राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने विश्वविद्यालय परिसर में पुरुष छात्रावास द्वार से अभिमंच सभागार तक विश्वविद्यालय के दिव्यांग छात्रों के साथ मतदान जागरूकता के संदर्भ में मेरा वोट मेरा अधिकार विषयक रैली का आयोजन किया गया.

रैली को सागर संभाग के आयुक्त डॉ. वीरेंद्र सिंह रावत और विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने ध्वज दिखाकर रवाना किया. डॉ. रावत और प्रो. गुप्ता दिव्यांग बच्चों को व्हील चेयर के माध्यम से अभिमंच सभागार तक लेकर गए. अभीमंच सभागार तक विश्वविद्यालय के ज्ञान मार्ग पर आयोजित रैली में विश्वविद्यालय के विद्यार्थी, केंद्रीय विद्यालय के

विद्यार्थी, प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षक एवं कर्मचारियों ने सहभागिता की. राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के विद्यार्थियों ने अभिमंच सभागार के प्रांगण में युवा मतदाता जागरूकता से संबंधित" मेरा पहला वोट देश के लिए" अभियान पर आधारित नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया. जिसका उद्देश्य पहली बार वोट देने वाले नागरिकों, महिलाओं, बुजुर्गों एवं दिव्यांगो को उनके वोट देने के अधिकारो को शामिल करते हुए मतदान करने के उद्देश्य से प्रेरित करना तथा एक बेहतर लोकतंत्र के निर्माण में अपनी भूमिका को निभाना था.

इस नुक्कड़ नाटक के उपरांत सागर जिला पंचायत सीईओ श्री पी.सी. शर्मा ने सभा को संबोधित किया. कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने युवाओं से आव्हान किया कि वो इस लोकतंत्र के पर्व में बढ़चढ़ कर सहभागिता करें. गांव और बस्तियों में जाकर नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोकतंत्र में भागीदारी के लिए मतदान करने का संदेश प्रसारित करें.

कार्यक्रम के अंत में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अंबिकदत्त शर्मा ने सभी का आभार माना. कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशुतोष और डॉ. सुनीत वालिया ने किया. रैली का संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा ने किया. रैली में में बड़ी संख्या में स्वयंसेवकों ने सहभागिता की साथ ही डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. पंकज तिवारी, डॉ. अभिषेक जैन, श्री समर्थ दीक्षित सहित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय दिव्यांग छात्रों को हर संभव सुविधाएँ देगा - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में अध्ययनरत छात्रों ने आज कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता से प्रशासनिक भवन में मुलाकात की. दिव्यांग छात्रों के साथ हुई चर्चा में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि उन्होंने विश्वविद्यालय में अध्ययनरत सभी दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए आवश्यक सुविधाएँ तत्काल मुहैया करने के आदेश दिए हैं. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय पुस्तकालय के नवनिर्मित भवन में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विशेष अध्ययन केंद्र शुरू किया जा रहा है. इस अध्ययन केंद्र में दिव्यांग विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु सभी जरुरी सुविधाएँ उपलब्ध करायी जाएँगी. विश्वविद्यालय परिसर में शीघ्र ही दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए एक कौशल विकास केंद्र शुरू करने की कार्यवाही प्रारम्भ कर दी गयी है, जिससे इन विद्यार्थिओं को अपनी प्रतिभा के आधार पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जायेंगे.

दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय परिसर में सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी हेतु हर संभव सुविधाएँ प्रदान किये जाने का कुलपति महोदया ने आश्वासन दिया. छात्रावासों में खेल सुविधाओं को लेकर उन्होंने कहा कि दिव्यांग विद्यार्थियों को खेल विभाग से सभी आवश्यक सुविधाएँ छात्रावास प्रशासन की माँग पर उपलब्ध करायी जायेंगी. इसी बातचीत में कुलपति महोदया ने बताया कि सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय से दिव्यांग विद्यार्थियों के हक में विश्वविद्यालय द्वारा समुचित सुविधाओं को प्राप्त करने की कोशिश की जा रही है. विश्वविद्यालय में शीघ्र ही दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए कम्पूटर, ब्रेल लिपि की पुस्तकों सहित सभी आवश्यक अध्ययन सुविधाओं को उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य प्रारम्भ हो चुका है. उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि शीघ्र ही विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के सभी विभागाध्यक्षों के नाम एक पत्र जारी कर विभिन्न विभागों में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए जरुरी सुविधाओं के सम्बन्ध में पूछा जायेगा और इससे सम्बंधित पत्र शीघ्र ही जारी कर दिया जाएगा. विश्वविद्यालय प्रशासन के माध्यम से अभी तक उपलब्ध हुई सुविधाओं को लेकर सभी दिव्यांग छात्रों ने कुलपति महोदया के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया. दिव्यांग छात्रों की इस मुलाकात के अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा एवं कुलानुशासक मंडल के सदस्य प्रो. राजेन्द्र यादव उपस्थित रहे.

फार्मेसी विभाग एडुरैंक की रैंकिंग में शीर्ष दस में शामिल

देश के अग्रणी फार्मेसी संस्थानों में शुमार डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के फार्मेसी विज्ञान विभाग पिछलें सात दशको से फार्मेसी शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अहम योगदान करता आ रहा है. इस विभाग को भारत के प्रतिष्ठित विशेषज्ञ शिक्षकों ने अपनी विशिष्ट कार्य शैली से संवारा है. यह विभाग देश के उन चुनिंदा शिक्षा संस्थानों में से है जहां भारत के फार्मेसी शिक्षा के पितामह प्रो. एम.एल. श्राफ ने विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया साथ ही साथ पद्मश्री प्रो. हरिकिशन सिंह ने अपनी उत्कृष्ट सेवाएं देते हुये विभाग को प्रगति पथ पर अग्रसर करने में अहम भूमिका निभाई. विभिन्न शोध विशेषताओं के आधार पर विभागीय शिक्षकों ने नोवल ड्रग डिलेवरी, कम्न्यूटर एडेड ड्रग डिजाईन, मेडिसिनल प्लांट रिसर्च, मेडिसिनल केमिस्ट्री के क्षेत्र में अनेक शोध उपलब्धियां अर्जित की हैं जो कि अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित है. विभाग के कई शोध, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त है. इस विभाग के शिक्षकों एवं शोधार्थियों को कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है. भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा विभाग के प्रो. संजय जैन को राष्ट्रीय स्तर के विजिटर अवार्ड से राष्ट्रपति भवन में आयोजित विशेष सम्मान समारोह में नवाजा गया. इसके साथ ही शिक्षकों को उत्कृष्ट सेवा अवार्ड, उत्कृष्ट शोध अवार्ड, यंग साइंटिस्ट अवार्ड जैसे सम्मानों से अनेकों बार सम्मानित किया गया है. विभाग के शिक्षक देश-विदेश की विभिन्न व्यावसायिक रेग्यूलेटरी एवं शैक्षिक परिषदों के महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित करते रहे हैं. विभाग के पुरा छात्रों का एक स्ट्रांग एल्यूमनी कनेक्ट स्थापित है जिसके तहत विभिन्न विकास आधारित गतिविधियों में वर्तमान विद्यार्थियों के बहुमुखी उत्थान के लिये कार्य किया जा रहा है. प्रतिवर्ष विभाग के 90 प्रतिशत से अधिक छात्र जीपेट एवं गेट जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होते रहे है. विभाग में शोध परियोजनाओं के तहत विभिन्न महत्वपूर्ण शोध उपलब्धियां अर्जित हुई हैं जिन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर औद्यौगिक दृष्टिकोण से सराहा गया है. हाल ही में विभाग ने एडूरैंक संस्था द्वारा देश भर के शैक्षणिक संस्थानों के वर्ष 2024 की रेंकिंग में टाप 10 में स्थान प्राप्त किया है. पूर्व में भी विभाग को राष्ट्रीय स्तर पर एन.आई.आर.एफ. रैकिंग में 11 वॉ स्थान प्राप्त हो चुका है. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने उक्त उपलब्धि पर प्रसन्नता वक्त करते हुये विभाग के शिक्षकों एवं शोधार्थियों को विभाग पहुँच कर बधाई दी.

फार्मेसी विभाग के छात्रों ने भोपाल के टूवा इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी में पुरस्कार जीते

भोपाल के टूवा इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी में ए.आई.सी.टी.ई. एवं सोसाइटी फॉर एथोनो फार्मेकोलोजी के द्वारा प्रायोजित नेशनल कान्फ्रेंस 14 एवं 15 अक्टूबर को आयोजित की गई जिसमें विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के शोध विद्यार्थियों ने भाग लिया. ओरल प्रजेन्टेशन में देवयानी राजपूत को प्रथम एवं रश्मि रावल को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ. पोस्टर प्रजेन्टेशन में प्रियदर्शी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ. विभाग के लगभग 12 शोद्यार्थियों ने विभाग के डॉ. सुशील कुमार काश्व के मार्गदर्शन में भाग लिया. सभी विजयी विद्यार्थियों को विभाग के अध्यक्ष प्रो. वंदना सोनी एवं समस्त शिक्षकों ने प्रशंसा व्यक्त की.

जनसंख्या अनुसंधान केंद्र द्वारा शोधपरक दक्षता विकसित करने की नई पहल – प्रो. भारद्वाज

विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग में "ज्ञान समृद्धि" कार्यशाला का समापन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में जनसंख्या अनुसंधान केंद्र तथा भूगोल विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित तीन दिवसीय "ज्ञान समृद्धि" कार्यशाला का आज समापन हुआ. कार्यशाला के समापन अवसर पर केंद्र के निदेशक प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज ने कार्यशाला में प्रतिभागी विद्यार्थियों को इसके माध्यम से प्राप्त नई जानकारियों एवं शोध प्रक्रियाओं को अपने शोध कार्य की गुणवत्ता बढ़ाने में उपयोग करने का सुझाव दिया. इस तीन दिवसीय कार्यशाला में कुल 52 शोधार्थियो और स्नातकोत्तर छात्र सम्मिलित हुए. कार्यशाला में कुल 12 सत्र आयोजित हुए. दिनांक 8 अप्रैल को जनसंख्या के वितरण, वृद्धि और इसके सामजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों पर प्रो. श्रीकमल शर्मा ने विस्तृत विश्लेषण के माध्यम से बताया कि किस प्रकार जनसंख्या की असंतुलित वृद्धि शिशु, युवा, वयस्क तथा वृद्ध आयु समूहो को प्रभावित कर रही है. डॉ. निखिलेश परचुरे ने जनसंख्या के सामाजिक-आर्थिक विकास में मिशन मोड प्रोजेक्ट की भूमिका और आवश्यकता के साथ उनके लाभ के बारे में जानकारी दी. इन प्रोजेक्ट के क्रियान्वयन हेतु सूचना तकनीक के उपयोग के बारे में विस्तार से बताया. विभिन्न डेटा को एकत्रित करने, उनके प्रस्तुतिकरण और नीति निर्धारण हेतु इस डेटा के उपयोग हेतु आवश्यक सूचनातंत्र की स्थिति के बारे में विभिन्न डेटा स्त्रोतों जैसे आई.एच.आई.पी., ई-अस्पताल, एच.एम.आई.एस. की जानकारी और उनकी उपादेयता के बारे में बताया.

कार्यशाला में दूसरे दिन प्रो. संतोष शुक्ला में शोध प्रक्रिया के विभिन्न आयामों पर विभिन्न उदाहरण देते हुए सरल भाषा में शोध प्रकिया में प्रारंभिक विचारों का तार्किक रूप से लेखन और उसके परिष्करण की आवश्यकता के बारे में विस्तार से बताया. शोधपत्र लेखन और उनके प्रस्तुतिकरण में होने वाली त्रुटियों को ठीक करने तथा आवश्यक सावधानियों के बारे में उन्होने छात्रों को महत्वपूर्ण सुझाव दिए। छात्रों को जनगणना, सेंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम, नेशनल सेंपल सर्वे, सिविल रजिस्ट्रेशन सिस्टम तथा नेशनल फेमेली हेल्थ सर्वे के डेटा की एकत्रीकरण की विशेषताओं और प्रक्रिया के बारे में जानकारी

के साथ जनगणना के आयु संबंधी आँकड़ों की उपयोगिता के बारे में बताया गया. इन आँकड़ों के विश्लेषण और प्रबंधन तथा प्रस्तुतिकरण में उपयोग होने वाले विभिन्न डेटा एनालिसिस विधियों की भी जानकारी दी गई.

कार्यशाला के तीसरे दिन भूगोल विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. हेमंत पाटीदार ने सेंपलिंग तकनीक की शोध हेतु आवश्यकता के बारे में छात्रों को विस्तारपूर्वक बताया. प्रोबेबिलिटी सेंपलिंग और नॉन-प्रोबेबिलिटी सेंपलिंग में अंतर और उनके उपयोग के बारे में विभिन्न उदाहरणों से छात्रों को अवगत कराया. पी.आर.सी. द्वारा किये गए प्रमुख शोध प्रोजेक्ट की अवधारणा, उनके उद्देश्य तथा डेटा संग्रहण, विश्लेषण के बारे में छात्रों को अवगत कराया गया. इन शोध प्रोजेक्ट के निष्कर्षों से स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों में सुधार हेतु किये गए परिवर्तनों के बारे में भी कार्यशाला में बताया गया.

कार्यशाला के अंतिम सत्र में प्रो. भारद्वाज ने छात्रों को डेटा विश्लेषण तथा उसके परिणामों की व्याख्या के बारे में महत्वपूर्ण सुझाव दिए. उन्होने छात्रों से तर्कसंगत शोध करने की और शोध की पुनरावृत्ति से बचने की सलाह दी.

कार्यशाला के समापन सत्र में भूगोल विभाग के समस्त प्राध्यापक गण तथा पी.आर.सी. के सभी इन्वेस्टीगेटर उपस्थित रहे. इस अवसर पर कार्यशाला के समन्वयक डॉ. हेमंत पाटीदार ने प्रथम "ज्ञान समृद्धि" कार्यशाला के आयोजन हेतु माननीय कुलपति द्वारा दिए गए मार्गदर्शन हेतु धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इस संबंध में कुलपति जी द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन से कार्यशाला का सफल आयोजन संभव हो सका. उन्होने तीन दिवसीय कार्यशाला के आयोजन की रूपरेखा बनाने और उसके क्रियान्वयन हेतु आवश्यक मार्गदर्शन के लिये प्रो. भारद्वाज को धन्यवाद दिया. कार्यशाला में विषय वक्ता के रूप में आमंत्रित प्रो. श्रीकमल शर्मा तथा प्रो. संतोष शुक्ला को भी धन्यवाद प्रेषित किया. डॉ. प्रवेंद्र कुमार तथा डॉ. आर. बी. अनुरागी ने भी इस अवसर पर छात्रों को संबोधित किया. उन्होने पी.आर.सी. के डॉ. निखिलेश परचुरे, डॉ. ज्योति तिवारी तथा डॉ. निकलेश कुमार के विशेष सहयोग हेतु धन्यवाद दिया. इस अवसर पर डॉ. सतीश सी. ने सभी उपस्थित शिक्षकों, पी.आर.सी. सदस्यो तथा विभाग के सभी सहयोगियों का इस कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु आभार व्यक्त किया तथा छात्रों से इस कार्यशाला के बारे अपने फीडबेक देने का आग्रह किया.

कम्प्यूटर, फैशन डिजाइनिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, फूड, डेयरी एवं विमानन विषयों में विशेषज्ञता का अभिनव केंद्र बनेगा विश्वविद्यालय- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

जेईई स्कोर और काउंसिलिंग के आधार पर अभ्यर्थी ले सकेंगे प्रवेश

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में बैचलर ऑफ़ टेक्नोलॉजी (बी. टेक.) के 06 पाठ्यक्रम डेयरी इंजीनियरिंग, एयरोनोटिकल इंजीनियरिंग, फैशन एंड एपेरल इंजीनियरिंग, फूड इंजीनियरिंग एंड टेक्नॉलोजी, इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन तथा कंप्यूटर

साइंस एंड इंजीनियरिंग संचालित हैं. इन सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जे.ई.ई.) काउंसिलिंग के माध्यम से होगी. प्रत्येक पाठ्यक्रम में 60-60 सीटें हैं. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग के पाठ्यक्रमों की लम्बे समय से मांग की जा रही थी. हमने छह स्नातक पाठ्यक्रम आरम्भ किये हैं. ये सभी पाठ्यक्रम एआईसीटीई से स्वीकृत हैं और आगे के सत्रों के लिए भी मान्यता मिल चुकी है. ये सभी पाठ्यक्रम कौशल विकास और रोजगार दोनों दृष्टिकोण से छात्र-छात्राओं के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे.

उन्होंने बताया कि अलग-अलग विशेषज्ञता वाले पाठ्यक्रम काफी उपयोगी हैं जैसे इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम से बिजली संयंत्र, विनिर्माण, वितरण, संचार और दूरसंचार, कंप्यूटर अनुप्रयोग, रेडियो और टेलीविजन, उपकरण निर्माण उद्योगों में रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे. इसी प्रकार कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग स्नातक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, एम्बेडेड सिस्टम, एथिकल हैकिंग, वायरलेस नेटवर्क, कंप्यूटर निर्माण, डेटाबेस सिस्टम, वेब एप्लिकेशन, एनीमेशन, कंप्यूटर ग्राफिक्स, साइंटिफिक मॉडलिंग, कम्प्यूटेशनल विज्ञान, वीडियो गेम जैसे कई क्षेत्रों में अपना करियर बना सकते हैं.

डेयरी इंजीनियरिंग के स्नातक सलाहकार, प्रबंधक, पोषण विशेषज्ञ और वैज्ञानिक के रूप में काम कर सकते हैं. वे गुणवत्ता नियंत्रण विभागों में भी काम कर सकते हैं. इसी तरह एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग करके विमानन और एवियोनिक्स, फ्लाइट मैकेनिक्स, इंजीनियर, एयरक्राफ्ट इंजीनियर, एयरक्राफ्ट प्रोडक्शन मैनेजर, एयर सेफ्टी ऑफिसर आदि के रूप में काम कर सकते हैं. फैशन डिजाइनिंग और परिधान के स्नातक फैशन इंजीनियर बनने के अलावा फैशन डिजाइनर, कपड़ों के निर्माता एवं विक्रेता, फैशन मर्चेंडाइजर्स, जूतों और एक्सेसरीज की नई शैलियों और डिजाइनों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं. खाद्य प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी में स्नातक करके विभिन्न क्षेत्र जैसे रेस्टोरेंट, होटल, अस्पतालों, खाद्य प्रसंस्करण कंपनियों, शीतल पेय निर्माण फर्मों, अनाज-मसाले और चावल मिलों, खानपान प्रतिष्ठानों, गुणवत्ता नियंत्रण संगठनों, पैकेजिंग उद्योगों और खाद्य अनुसंधान प्रयोगशालाओं में सेवा एवं रोजगार के अवसर मिलेंगे.

संबद्ध महाविद्यालयों के अकादमिक एवं शैक्षणिक विकास के लिए विश्वविद्यालय सदैव तत्पर - प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में कुलपति सम्मेलन कक्ष में विश्वविद्यालय के संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यों/निदेशकों/प्रतिनिधियों की एक बैठक विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के साथ संपन्न हुई. इस बैठक में निदेशक, महाविद्यालयीन विकास परिषद एवं संबद्ध 16 महाविद्यालयों के प्राचार्यों/निदेशकों ने भाग लिया.

संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यों की ओर से संयुक्त रूप से डॉ. विवेक रावत, डॉ. सुनील गुप्ता डॉ. धकाटे, डॉ. तिवारी, डॉ. अशीष पटेरिया एवं डॉ. राजू टंडन उपस्थित थे. बैठक में इस पर चर्चा की गई कि विगत वर्षों में विश्वविद्यालय से संबद्ध

महाविद्यालयों के लिए नवीन पाठ्यक्रमों के संचालन हेतु अनुमतियाँ प्राप्त नहीं हो पा रही हैं, इससे महाविद्यालय विश्वविद्यालय के साथ कदम से कदम मिला कर शैक्षणिक प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो पा रहे हैं. कुलपति महोदया ने इस विषय की गंभीरता को समझते हुये अविलम्ब इस समस्या के समाधान हेतु विद्या परिषद् की बैठक में प्रस्ताव लाने एवं विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद् के समक्ष इस विषय को रखने के निर्देश दिये. निदेशक/प्राचार्य/प्रतिनिधि संबद्ध महाविद्यालयों ने अपने अपने महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर एवं स्नातकोत्तर स्तर पर नवीन पाठ्यक्रम हेतु उपलब्ध संसाधनों से अवगत कराते हुये निवेदन किया कि विश्वविद्यालय निरीक्षण कर महाविद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों का निरीक्षण करा कर नवीन पाठ्यक्रमों के लिये आवश्यक आधारभूत संरचना एवं अन्य अनुषांगिक संसाधनों का अवलोकन कर नवीन पाठ्यक्रम के लिए अनुमति प्रदान करें, जिससे महाविद्यालय विश्वविद्यालय के अकादमिक प्रगति के प्रति उठाये जा रहे अवसरों के अनुरूप शैक्षणिक माहौल तैयार कर सके.

बैठक में कुलपति ने संबोधित करते कहा कि उनका मन्तव्य है कि विश्वविद्यालय के संबद्ध महाविद्यालय शैक्षणिक एवं अकादमिक प्रगति के सोपानों पर आगे बढ़े. विश्वविद्यालय हर स्तर पर जो भी सहयोग होगा, उसे प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। विश्वविद्यालय के द्वार महाविद्यालयों के लिए खुले हुये हैं. महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय के विभाग, पुस्तकालय, प्रयोगशालायें एवं शोध हेतु जिन भी संसाधनों की आवश्यकता है, विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के साथ-साथ महाविद्यालय के विद्यार्थियों को भी सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सतत् तैयार है.

उन्होंने कहा कि संबद्ध महाविद्यालयों के लिए विश्वविद्यालय एक सेतु है. विश्वविद्यालय की अकादमिक उन्नति के साथ साथ महाविद्यालयों की अकादमिक प्रगति भी आवश्यक है. अकादमिक एवं खेलकूद गतिविधियों के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियों, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, शैक्षणिक गतिविधियों संबद्ध महाविद्यालय के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ सहभागिता करना चाहिये. इस हेतु निदेशक, महाविद्यालयीन विकास परिषद् को कार्य योजना बनाने के लिए निर्देशित किया गया है.

उन्होंने संबद्ध महाविद्यालयों की महत्वपूर्ण समस्या, नवीन पाठ्यक्रमों की अनुमति के संबंध में कहा कि इसका समाधान विद्या परिषद् एवं कार्यपरिषद् के माध्यम से ही निकाला जा सकता है. विश्वविद्यालय इस संबंध में शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली से मार्गदर्शन प्राप्त कर एवं अन्य केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में इस दिशा में उठाये गये कदमों के अनुरूप

यथाशीघ्र निर्णय कर इस समस्या का सकारात्मक हल निकालने का प्रयास करेगा. साथ ही उन्होंने कहा कि संबद्ध महाविद्यालयों के लिए स्थायी संबद्धता प्रदान किये जाने विषयक प्रस्ताव पर भी केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 एवं परिनियम तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रावधानों के अनुरूप कार्यवाही की जायेगी. माननीया कुलपति महोदया ने संबद्ध महाविद्यालयों के लिए राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् से अपने अपने महाविद्यालयों के मूल्यांकन कराये जाने एवं अकादमिक प्रगति के लिए शैक्षणिक माहौल तैयार किये जाने पर जोर दिया तथा निकट भविष्य में महाविद्यालयों हेतु जागरूकता कार्यशाला के सहयोग से संपन्न करवाई जायेगी, जिससे कि महाविद्यालयों को उचित मार्गदर्शन मिल सके. डॉ. गुप्ता, टाइम्स कॉलेज, दमोह ने संबद्ध महाविद्यालयों की समस्याओं के त्वरित निराकरण, महत्वपूर्ण सुझावों एवं कार्यों के त्वरित क्रियान्वयन के लिये माननीया कुलपति महोदया का आभार माना। धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक संपन्न हुई.

डॉ. अंबेडकर चेयर के द्वारा महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती मनाई गई

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में डॉ. अंबेडकर चेयर के द्वारा सभा कक्ष में महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती पर व्याख्यान का आयोजन किया गया. उक्त अवसर पर सभी ने महात्मा ज्योतिबा फुले जी के चित्र पर पुष्प अर्पित किया. साथ ही उनके विचार एवं कार्य को सभी के द्वारा बताया गया. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. देवेंद्र विश्वकर्मा ने कहा कि व्यक्ति का जन्म होता है और एक दिन मृत्यु होती है लेकिन इस दौरान समाज और देश के लिए जो कार्य करता है वह महान और महात्मा बन जाता है महात्मा ज्योतिबा फुले ने अपने जीवन में शिक्षा विशेष कर महिला शिक्षा, बाल विवाह का विरोध, कृषि विकास, विद्यालयों की स्थापना आदि अनेक कार्य किया. समाज के उत्थान कार्य के लिए उन्होंने अपना जीवन लगा दिया. कार्यक्रम में बालचन्द्र, अजब सिंह, दीनदयाल, हेमराज, राम प्रसाद, रविंद्र, सुरेश आदि शोध छात्रों ने भी अपनी प्रस्तुतीकरण दी.

विश्वविद्यालय के विभागीय संग्रहालयों की अंतर्राष्ट्रीय पहचान, आधुनिकीकरण की दिशा में होंगे कार्य - कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में होगा संग्रहालय विज्ञान पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला तथा नेशनल हिस्ट्री म्यूजियम के साथ समझौता

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में कुलपति सम्मेलन कक्ष में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में विभागाध्यक्ष एवं समन्वयक, संग्रहालय - जिसमें विश्वविद्यालय की प्रो. श्वेता यादव, विभागाध्यक्ष, प्राणीविज्ञान विभाग, प्रो. एच. थामस, विभागाध्यक्ष, भूगर्भशास्त्र विभाग, प्रो. अजीतकुमार जैसवाल, विभागाध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग, प्रो.

ममता पटेल, प्रभारी विभागाध्यक्ष, अपराधशास्त्र एवं न्यायिक विज्ञान विभाग तथा प्रो. नागेश दुबे, विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के साथ संबंधित विभागों के समन्वयक बैठक में सम्मिलित हुये. कुलपति ने बैठक में सम्बोधित करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के पांच शैक्षणिक विभागों में संचालित संग्रहालय अपनी अंतर्राष्ट्रीय पहचान रखते हैं तथा इन संग्रहालयों का आधुनिकीकरण कर इन्हें पूरे देश का आकर्षण बनाया जायेगा. इन विभागों के ये संग्रहालय विषय विशेषज्ञों के साथ-साथ शोधार्थियों एवं नव अध्ययन के लिए आने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा का एक जीवंत स्रोत है. इसके लिए विश्वविद्यालय संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली एवं अन्य अनुषांगिक मंत्रालयों के सहयोग से संग्रहालयों का आधुनिकीकरण करने के लिए कटिबद्ध है. तकनीकी के दौर में हमारे विश्वविद्यालय के इन संग्रहालयों के अभिलेखों का डिजीटाईजेशन किया जायेगा, जिससे कि संग्रहालयों से संबंधित सभी जानकारी ऑनलाईन उपलब्ध हो सके. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुपालन में विश्वविद्यालय अपने-अपने विभागों में कौशल विकास से संबद्ध पाठ्यक्रमों का समावेश कर रहे हैं. इस दिशा में विश्वविद्यालय अपने संग्रहालयों से संबंधित कौशल विकास के अंतर्गत 06 माह का प्रमाण पत्र के साथ-साथ एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम तैयार करेगा, जिससे इस प्रकार के डिप्लोमा को पूर्ण करने के उपरांत यहां के विद्यार्थियों के लिए देश के विभिन्न संग्रहालयों में निकलने वाली भर्तियों में रोजगार प्राप्त करने के अवसर प्राप्त हो सकें. इसके लिए उक्त विभागों के विभागाध्यक्ष संयुक्त रूप से एक कार्य योजना तैयार करेंगे तथा यह पाठ्यक्रम 2024-25 सत्र से प्रारंभ करने की योजना है. संग्रहालयों के बारे में पर्याप्त जानकारी एवं प्रचार-प्रसार के साथ-साथ विश्वविद्यालय के स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों, संबद्ध महाविद्यालयों के विद्यार्थियों तथा अन्य विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों हेतु दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 27 एवं 28 जून 2024 को विश्वविद्यालय में किया जायेगा. इस राष्ट्रीय कार्यशाला में देश के ख्यातनाम विषय विशेषज्ञों के साथ विश्वविद्यालय के रिसोर्स पर्सन प्रायोगात्मक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे, जिससे कि सभी प्रतिभागी लाभान्वित होंगे. इसी कार्यशाला में नेशनल हिस्ट्री म्यूजियम के साथ विश्वविद्यालय एक समझौता अनुबंध करेगा, जो कि विश्वविद्यालय में अकादमिक एवं शैक्षणिक प्रगति के लिए लाभकारी रहेगा.

डॉ. अंबेडकर एक ऐसी किताब हैं जिनके पन्ने कभी खत्म नहीं होते - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में डॉ. अम्बेडकर जयंती के उप लक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉक्टर अम्बेडकर एक ऐसी किताब हैं जिनके पन्ने कभी खत्म नहीं होते. उनके

व्यकितत्व के अनगिनत पहलू हैं. किसी भी पहलू पर बात करें तो समय कम पड़ जाए. वे एक महामानव थे. एक अपराजेय नायक थे. स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व के पैरोकार डॉ अम्बेडकर संवैधानिक लोकतंत्र की स्थापना के शिल्पकार थे. उनका शिक्षा, समाज, स्त्री मुद्दों, अर्थशास्त्र, पत्रकारिता, राजनीति और नागरिक

समाज से जुड़े प्रत्येक मुद्दों पर अपनी एक अलग दृष्टि थी. वही दृष्टि आज के विकसित भारत की परिकल्पना में महती भूमिका निभा रही है. डॉ. अम्बेडकर के विचार और दर्शन के बिना विकसित भारत की परिकल्पना नहीं साकार होगी. वे समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के कल्याण और सशक्तिकरण की बात करते थे. यही आत्मनिर्भर भारत, विकसित भारत और विश्वगुरु भारत की परिकल्पना का मूल लक्ष्य है. उन्होंने विवि के डॉ. अम्बेडकर चेयर के तहत किये जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में डॉ. अम्बेडकर चेयर के अतिरिक्त समाज के कमजोर तबकों के विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क कोचिंग भी संचालित है. इसके अलावा शीघ्र ही विश्वविद्यालय में डॉ. अम्बेडकर को समर्पित एक विशाल अध्ययन केंद्र भवन के रूप में आकर लेगा जो प्रस्ताव की स्वीकृति के उपरांत निर्मित होना आरंभ हो जाएगा.

मुख्य वक्ता के तौर पर आमंत्रित अतिथि इंडियन इकोनॉमिक एशोसिएशन के सचिव प्रो. रवींद्र ब्राम्हे ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर कहते थे कि कृषि के विकास के लिए औद्योगिकरण आवश्यक है. वे चाहते थे कि आर्थिक और सामाजिक विकास सबका होना चाहिए. शिक्षा राजनीति, आर्थिक, सामाजिक विकास के माध्यम से सबका कल्याण होना चाहिए. भारत की जनसंख्या अधिक है इसलिए इस जनसंख्या को श्रम शक्ति के रूप में देखना चाहिए और इसका सही उपयोग करना चाहिए. 2047 में हम विश्व की सबसे बड़ी श्रम शक्ति होंगे वही हमारे आर्थिक विकास पर विकसित भारत का मार्ग बनाएगी. महिलाओं के आर्थिक रूप से सबलता के लिए कृषि क्षेत्र का भी औद्योगिकरण अति आवश्यक है.

कार्यक्रम में प्रो. चंदा बैन ने कहा कि बाबासाहब एक जुनूनी शख्शियत थे. शिक्षा प्राप्त करने केलिए उन्होंने काफी संघर्ष किया. उनका जीवन संघर्ष आज के युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है. उन्होंने समाज के वंचित तबकों केलिए आवाज उठाई. वे शिक्षा को बदलाव का सबसे बड़ा हथियार मानते थे. वे सामाजिक बदलाव के प्रवर्तक थे, आधुनिक विचार और प्रगतिशील विचारों के प्रस्तोता थे. प्रो. अजीत जायसवाल ने भी डॉ. अम्बेडकर के दर्शन, विचार एवं कार्यों का स्मरण करते हुए उनको श्रद्धाजलि दी. कार्यक्रम का संचालन डॉ. देवेंद्र ने किया.

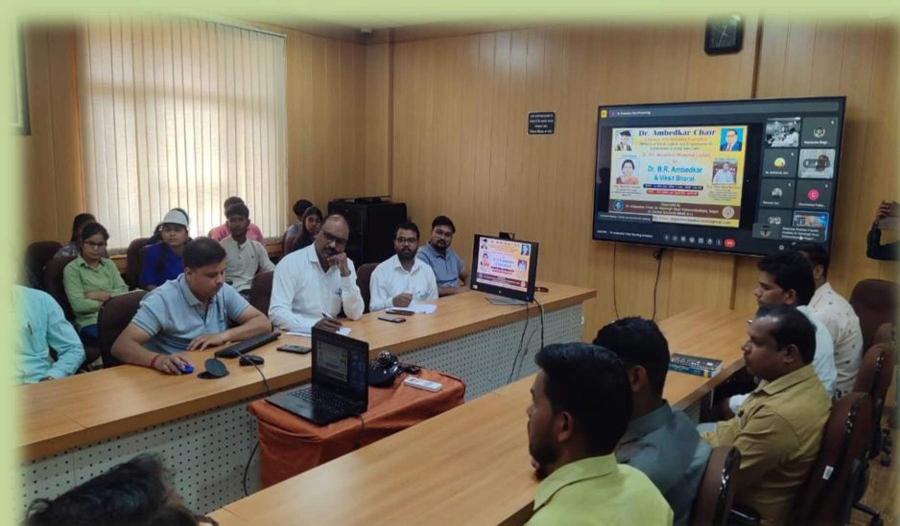

कार्यक्रम में डॉ. संजय शर्मा, डॉ. हिमांशु, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. रविदास, डॉ. बेंद्रे, अजब सिंह, एवं बड़ी संख्या में एनएसएस के स्वयंसेवक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे. कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में अध्यक्षता डा. बेंद्रे एवं डॉ. आशुतोष ने की. इस सत्र में 15 शोध पत्रों का वाचन किया गया और कई शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने बाबासाहब पर केंद्रित अपने विचार प्रस्तुत किये. कार्यक्रम का संचालन डॉ. रमाकांत ने किया.

पीएचडी प्रवेश परीक्षा केंद्र का कुलपति ने किया निरीक्षण

डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, में सत्र 2023-24 की पीएचडी प्रवेश परीक्षा दिनांक 13-14 अप्रैल 2024 को विश्वविद्यालय के महर्षि कणाद भवन में पांच पालियों में आयोजित की गई. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने परीक्षा केंद्र पहुँचकर व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और सुविधाओं का जायजा लिया. प्रवेश प्रकोष्ठ के चेयरमैन प्रो. दिवाकर शुक्ला ने बताया कि 36 विषयों में 1300 से अधिक छात्रों ने पीएचडी प्रवेश परीक्षा हेतु आवेदन किया था. यह परीक्षा सागर केंद्र पर आयोजित की गई. निरीक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के प्रभारी परीक्षा नियंत्रक डॉ एस पी गादेवार, प्रो दिवाकर शुक्ला, परीक्षा समन्वयक प्रो रत्नेश दास सहित अन्य अधिकारी एवं शिक्षक मौजूद रहे.

डॉ. अंबेडकर चेयर ने मनाई डॉ. बी.आर. अंबेडकर जी की जयंती

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में डॉ. अंबेडकर चेयर के द्वारा विभाग में डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की जयंती मनाई गई. उक्त अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, डॉ. कालीनाथ झा, डॉ. आर.टी. बेंद्रे, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. देवेंद्र विश्वकर्मा आदि के द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित किया गया. उक्त कार्यक्रम में डॉ. रमाकांत, अजब सिंह, दीनदयाल, अनुज आदि अनेक शोध छात्रों की उपस्थिति रही.

विश्वविद्यालय में चार वर्षीय आईटीईपी पाठ्यक्रम में आवेदन शुरू, 30 अप्रैल तक कर सकेंगे आवेदन

12वीं पास कर सकेंगे आवेदन, एनसीईटी के आधार पर होगा दाखिला

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के शिक्षा विभाग में उपलब्ध चार वर्षीय इंटीग्रेटिड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (आईटीईपी) में दाखिले की प्रक्रिया शुरू हो गई है. विश्वविद्यालय में इस पाठ्यक्रम में प्रवेश राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा नेशनल कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (एनसीईटी) के आधार पर होगा. इसके लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि टीचर एजुकेशन एक पॉपुलर पाठ्यक्रम है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को दृष्टिगत रखते हुए टीचर एजुकेशन पाठ्यक्रमों में कई बदलाव किये गये हैं. शिक्षकीय पेशा एक सम्मानजनक पेशा माना जाता है और अधिकांश लोगों की रूचि और लक्ष्य शिक्षक बनना होता है. रोजगार की दृष्टि से युवाओं के लिए चार वर्षीय आईटीईपी पाठ्यक्रम एक अच्छा विकल्प है. विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में उपलब्ध इस पाठ्यक्रम के लिए आयोजित होने जा रही राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षा के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू हो गई है.

इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (ITEP) चार साल का डुअल डिग्री प्रोग्राम है. इसमें बीए-बीएड, बीएससी-बीएड, बीकॉम-बीएड जैसे कोर्स संचालित होंगे. आईटीईपी कोर्स के लिए कम से कम 12वीं पास होना चाहिए. इस कोर्स के जरिए विद्यार्थी चार वर्ष में ही स्नातक डिग्री और टीचर एजुकेशन डिग्री दोनों प्राप्त कर सकते हैं. इससे पहले 12वीं के बाद ग्रेजुएशन और बीएड करने पर कुल पांच साल लगते थे. यह कोर्स कुल आठ सेमेस्टर का है. शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने बताया कि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) द्वारा मान्यता प्राप्त चार वर्षीय इंटीग्रेटिड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (आईटीईपी) के अतंर्गत शैक्षणिक सत्र 2024-25 में बीए-बीएड, बीएससी-बीएड, बीकॉम-बीएड प्रत्येक में 50 सीटों सहित कुल 150 सीटें उपलब्ध हैं. इसमें दाखिले के लिए निर्धारित शैक्षणिक योग्यता 12वीं पास निर्धारित है. प्रवेश प्रकोष्ठ समन्वयक प्रो. दिवाकर शुक्ला ने बताया कि एनटीए के माध्यम से एनसीईटी -2024 की परीक्षा के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया आरंभ हो गई है. आवेदन की अंतिम तिथि 30 अप्रैल है. इच्छुक अभ्यर्थी विश्वविद्यालय की वेबसाईट का अवलोकन कर एनटीए की वेबसाईट ncet.samarth.ac.in से जानकारी प्राप्त कर आवेदन कर सकते हैं.

भारत में शोध और नवाचार ईकोसिस्टम बेहतर बनाने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे - प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली की 98वीं वार्षिक बैठक और कुलपतियों की राष्ट्रीय संगोष्ठी 'उच्च शिक्षा @2047' विषय पर आईसीएफएआई फाउंडेशन फॉर हायर एजुकेशन, हैदराबाद (डीम्ड विश्वविद्यालय) में 14 से 17 अप्रैल तक आयोजित की गई. समारोह में तेलंगाना के राज्यपाल ने उद्घाटन वक्तव्य दिया. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर 'नर्चरिंग रिसर्च एंड इनोवेशन ईकोसिस्टम' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि भारत में शोध और नवाचार ईकोसिस्टम बेहतर बनाने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे. इस विशेष सत्र के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि समाजों और अर्थव्यवस्थाओं की उन्नति और मानव ज्ञान की प्रगति के लिए अनुसंधान और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र महत्वपूर्ण है क्योंकि यह रचनात्मकता को बढ़ावा देता है, तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देता है और विभिन्न जटिल चुनौतियों का समाधान करता है. नवाचारी शोध नीति, फंडिंग, सहयोगात्मक शोध नेटवर्क, अंतरानुशासनिक शोध को बढ़ावा देना आज के समय की आवश्यकता है. इसलिए इस पर विचार-विमर्श प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण है.

उन्होंने कहा कि वर्ष 2023 की तुलना में वर्ष 2024 में भारत में क्यूएस विश्व रैंकिंग में सुधार हुआ है. आईआईटी बॉम्बे, रैंकिंग 116 से 95, आईआईटी दिल्ली 67 से 63, और आईआईएम अहमदाबाद 53 से 22वें स्थान पर पहुंच गया है, जो हमारे अनुसंधान क्षमता में सुधार के कारण संभव हुआ है. शिक्षकों की गुणवत्ता और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस में अनुसंधान के परिणामस्वरूप केरल में एआई शिक्षकों को लॉन्च किया गया है जो 3 भाषाओं में पढ़ा सकते हैं. केआईईटी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स द्वारा ANUSHKA (आर्टिफिशियल नेटवर्क यूनिट फॉर स्मार्ट ह्यूमन नॉलेज असिस्टेंस) लॉन्च की गई है, जो 21 भाषाओं को समझती है, दिल की धड़कन तक भी जानती है। यह होम ऑटोमेशन और सेल्फ कलिंग के सिद्धांतों पर आधारित है. उन्होंने

यह भी प्रस्ताव रखा कि रिसर्च इन्फ्रास्ट्रक्चर में निवेश करने, शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों को मजबूत करने, एकेडमिक और इंडस्ट्री के बीच सहयोग को बढ़ावा देने, स्टार्ट अप और उद्यमियों को सहयोग करने, नवाचारी संस्कृति को बढ़ावा देने और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने से शोध और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को पोषित और मजबूत किया जा सकता है. सत्र के दौरान उन्होंने कई विश्वविद्यालयों के कुलपतियों द्वारा व्यक्त चिंताओं और प्रश्नों का समाधान किया. पूरा सत्र जीवंत रहा और इस दौरान कई उपयोगी विचार बिन्दुओं पर चर्चा की गई.

इस सत्र में हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. जे. राव, जैन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राज सिंह, भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार श्री राहुल कुलश्रेष्ठ ने भी अपना उद्बोधन दिया. सत्र में एल्सिवियर समूह की डॉ. शिप्रा दत्ता ने ‘रिसर्च इंटेलीजेंस’ पर प्रस्तुति दी.

ऐतिहासिक स्थल एरण विश्व विरासत सूची में शामिल होने की योग्यता रखता है- प्रो. नागेश दुबे

विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व संग्रहालय में विश्व विरासत दिवस मनाया गया

18 अप्रैल को ‘विश्व विरासत दिवस’ के अवसर पर प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के संग्रहालय में विश्व विरासत दिवस मनाया गया. इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने विश्व विरासत दिवस की महत्ता को बताया

साथ ही कहा कि संग्रहालय में संरक्षित एरण से प्राप्त गुप्तकालीन नृवराह, नृसिंह, गजलक्ष्मी एवं हनुमान की महत्वपूर्ण प्रतिमाओं के साथ-साथ अनेक महत्वपूर्ण पुरानिधियाँ विद्यमान हैं, जो एरण की सांस्कृतिक विरासत को प्रस्तुत करती हैं. प्रो. नागेश दुबे ने कहा कि सागर जिले में स्थित ऐतिहासिक

दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण स्थल एरण को विश्व विरासतों की सूची में सम्मिलित किया जाये. ऐतिहासिक स्थल एरण विश्व विरासत सूची में शामिल होने की योग्यता रखता है.

एरण में नवपाषाण काल से लेकर पूर्वमध्यकाल तक के पुरातात्त्विक साक्ष्य उपलब्ध हैं. गुप्तकाल में एरण का महत्व सबसे अधिक रहा है. वर्तमान में एरण पुरास्थल पर गुप्तकाल में निर्मित विष्णु मंदिर, महावराह की प्रचंड प्रतिमा, महाविष्णु मंदिर के गर्भगृह में प्रतिष्ठित महाविष्णु की विशाल प्रतिमा, नृसिंह प्रतिमा, कृष्णलीला से संबंधित शिलाफलक, 47 फुट ऊँचा गरूड़ ध्वज स्तम्भ, भारत में सबसे प्राचीन अभिलिखित सती स्तम्भ (शिवलिंग) दृष्टव्य हैं. एरण को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाना अत्यावश्यक है.

प्रो. दुबे ने अपने व्यक्तव्य में कहा कि हमें हमारे बुन्देलखण्ड की प्राचीन धरोहरों के प्रति जनसामान्य में जागरुकता फैलाने की आवश्यकता है. जिससे हम बुन्देलखण्ड की गौरवपूर्ण विरासतों को सहेज कर रख सकें. जिनसे भावी पीढ़ियां भी लाभान्वित हो सकें. इतिहास एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में कार्य कर रहे शोधार्थियों के द्वारा सामान्य जन में जागरुकता को फैलाने के लिए विशेष कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना अत्यावश्यक है.

इस अवसर पर विभागीय शिक्षकगण डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव, अतिथि शिक्षकगण डॉ. मशकूर अहमद कादरी, डॉ. शिवकुमार पारोचे, शोध छात्रा/छात्र कु. यामिनी योगी, संजय आठिया, भरत यादव एवं सोहनलाल मोदनवाल के साथ-साथ विभागीय छात्र-छात्राऐं रमन, शंकर सिंह, आदर्श यादव, बसंत चढ़ार, हेमन्त पवार, निहारिका ठाकुर, मल्लिका मण्डल, प्रतिष्ठा लोधी, अदिति जाट, पूर्वा साहू तथा कर्मचारी गण मो. आदिल खान, हाशिम खान, मोहन राय एवं राजेन्द्र रजक आदि उपस्थित रहे.

करुणा चौरसिया को रसायन शास्त्र में शोध उपाधि

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के रसायन शास्त्र विभाग की शोध छात्रा करुणा चौरसिया पिता श्री मुकेश कुमार चौरसिया माता श्रीमती अनीता चौरसिया को शोध उपाधि प्राप्त हुई. उनका शोध कार्य "सिंथेसिस फिजिको केमिकल कैरेक्टराइजेशन एंड बायोलॉजिकल स्टडीज ऑफ सम न्यू थायोसेमीकरबाजाइड डेराईबड लिगैंडस एंड देयर थ्री डी ट्रांजीशन मेटल- कॉम्प्लेक्स" विषय पर किया. करुणा चौरसिया ने अपना शोध कार्य डॉ. ऋतु यादव के पर्यवेक्षण में संपन्न किया. उनकी इस सफलता पर विभाग अध्यक्ष प्रो. ए.पी. मिश्रा एवं विभाग के सभी शिक्षक गणों साथ ही विद्यार्थियों द्वारा बधाई प्रेषित की.

राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग में "रूस-यूक्रेन युद्ध, वैश्विक व्यवस्था में भारत की स्थिति की रूपरेखा" विषय पर विशेष व्याख्यान का हुआ आयोजन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग में "रूस-यूक्रेन युद्ध, वैश्विक व्यवस्था में भारत की स्थिति की रूपरेखा" विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया. इस विशेष व्याख्यान की मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो. माधुरी सुखिजा ने विषय पर प्रकाश डालते हुए इसे मानवता पर संकट बताया. प्रो. सुखिजा ने रूस-यूकेन युद्ध के संदर्भ में भारत के पक्ष की सराहना करते हुए इस बात पर भी प्रकाश डाला कि बदलते अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भारत की भूमिका किस प्रकार की हो. मुख्य वक्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में रूस-युक्रेन

युद्ध से विभिन्न देशों के समक्ष विभिन्न चुनौतियां उभरकर सामने आ रही है जिनका समाधान सभी देशों एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे UNO, SAARC एवं ASEAN के द्वारा मिलकर किया जाना चाहिए.

इस कार्यक्रम की आयोजक विभागाध्यक्ष प्रो. अनुपम शर्मा रहीं. कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. आफरीन खान द्वारा किया गया. इस कार्यक्रम में प्रो. अनुपमा कौशिक, डॉ. नेहा निरंजन, डॉ. जनार्दन, डॉ. दीपक मोदी एवं डॉ. रणवीर सिंह व विभाग के शोधार्थी समीर पांडे, विवेक प्रसाद, विनायक मिश्रा, दामिनी सिंह, निधि सिंह, प्रियंका यादव, विशाल तिवारी एवं हिमांशु त्रिपाठी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहभागिता दर्ज की एवं विभाग के विद्यार्थी भी इस विशेष व्याख्यान में उपस्थित रहे.

विकसित भारत के निर्माण में वैदिक अध्ययन एवं भारतीय ज्ञान परंपरा अध्ययन की महत्त्वपूर्ण भूमिका - कुलपति

विश्वविद्यालय के वैदिक अध्ययन विभाग में हो रहा है इन विषयों का अध्ययन, 12वीं के बाद एडमिशन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में भारतीय ज्ञान परंपरा को संरक्षित रखने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय में वैदिक अध्ययन विभाग की स्थापना की गई है. 12वीं की पढ़ाई के बाद विद्यार्थी इसमें डिप्लोमा, सर्टिफिकेट, डिग्री प्राप्त कर सकते हैं. इसमें शोध के पाठ्यक्रम भी इसी वर्ष से शुरू किए जा रहे हैं.

वैदिक अध्ययन से पढ़ाई करने वाले विद्यार्थी एक तरफ जहां भारत की प्राचीन संस्कृति, ज्ञान की वास्तविकता और अखंडता को समझेंगे, वहीं दूसरी तरफ इस कोर्स को करने के बाद वह शिक्षक और प्रोफेसर भी आसानी से बन सकेंगे. ये एसएससी, पीएससी, एमपीपीएससी सहित अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में भी भाग ले सकेंगे.

वैदिक अध्ययन विभाग देश का पहला केंद्र

विश्वविद्यालय में वैदिक अध्ययन विभाग (Department of Vedic Studies), भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन के लिए समर्पित विभाग है. इस विभाग में B.A. (Hons) Vedic Studies, Diploma Course, Certificate course एवं PhD Program in Vedic Studies पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं. BA (Hons) Vedic Studies में सीटों की संख्या 40 है. वैदिक अध्ययन नाम से यह देश का पहला विभाग है. दिल्ली यूनिवर्सिटी और बीएचयू में भी इस तरह के कोर्स शुरू हुए हैं लेकिन उनकी प्रकृति भिन्न हैं. यहां डिप्लोमा और सर्टिफिकेट सीधी भर्ती से कर सकते हैं, वहीं डिग्री और पीएचडी के लिए एंट्रेंस एग्जाम पास करना होगा.

क्या होगा वैदिक अध्ययन विभाग में

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता ने बताया कि भारतीय प्राचीन ज्ञान के कोष वेद भारत की विशाल ज्ञान राशि के परिचायक हैं. भारतीय गणित, भारतीय विज्ञान, आयुर्वेद, श्रीमद्भगवद्गीता में आत्म-प्रबंधन, उपनिषदों में निहित ज्ञान,

चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास से युक्त भारतीय शिक्षण पद्धति, भारतीय दर्शन की वैज्ञानिकता, वैदिक गणित, महर्षि पतंजलि प्रणीत योग जैसे अनेक विषयों का समावेश इन पाठ्यक्रमों में समुचित रूप से किया गया है.

कोर्स का मुख्य उद्देश्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों के अनुरूप इस विभाग का प्रमुख उद्देश्य कला, विज्ञान एवं वाणिज्य जैसी विभाजक धाराओं से परे अन्तर्वैषयिक (Interdisciplinary) एवं बहु वैषयिक (Multidisciplinary) समझ को विकसित करना, भारतीय ज्ञान को तार्किक एवं वैज्ञानिक रूप से स्थापित करके वैश्विक समस्याओं का निदान प्रस्तुत करना है.

पुस्तकें सभ्यता की सबसे प्रमाणिक प्रतिबिंब हैं - प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

विश्वविद्यालय में विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में केंद्रीय पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक परिषद् के तत्त्वावधान में विश्व पुस्तक दिवस

एवं कॉपीराईट दिवस 23 अप्रैल मनाया गया जिसमें विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में उपस्थित हुए. इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पुस्तकें हमारी आजीवन मित्र होती हैं. जो आनंद पुस्तक पढ़ने में है वह इंटरनेट पर मौजूद सामग्री के पढ़ने में नहीं है. आज के समय में भी जब इंटरनेट पर अथाह सामग्री मौजूद है, बावजूद इसके हम अख़बार जरूर मंगाते हैं और पढ़ते हैं. पुस्तक को किसी भी अन्य सामग्री से स्थानांतरित नहीं किया जा सकता क्योंकि पुस्तकें सभ्यता की सबसे प्रमाणिक प्रतिबिंब हैं. साहित्य की महान शख्शियत विलियम शेक्सपीयर की

पुण्यतिथि पर यह दिवस यूनेस्को द्वारा घोषित किया गया था. उन्होंने कहा कि पुस्तक का हर पन्ना नई सूचना, नई ऊर्जा एवं नए ज्ञान का वाहक है. एक विद्यार्थी और किताब का अटूट संबंध होता है. यह आयोजन विद्यार्थियों को किताबों के और अधिक करीब लाएगा उन्होंने विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय में 'बुक क्लब' बनाने के लिए निर्देश देते हुए कहा कि इस माध्यम से कोई भी पाठ्य सामग्री दान कर सकता है. उन्होंने अपने पिता स्व. श्री एम. सी वार्ष्णेय के निजी पुस्तकालय में उपलब्ध 281 पुस्तकें विश्वविद्यालय के केन्द्रीय

पुस्तकालय को समर्पित कीं. स्व. श्री वार्ष्णेय इंजीनियरिंग के अध्येता और अगाध साहित्य प्रेमी के साथ-साथ अद्वितीय रचनाकार भी थे. उनके द्वारा लिखित पुस्तक 'एक अनाम औरत के नाम ख़त- अनुरक्ता' इस बात का उदाहरण है. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अपने पिता द्वारा संकलित पुस्तकों को विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध कराकर ज्ञान की विरासत की समृद्धि के प्रति अपना संकल्प व्यक्त किया. साथ ही उन्होंने जंतु विज्ञान के क्षेत्र में स्वयं के अध्ययन एवं शोध से अर्जित महत्त्वपूर्ण ज्ञान सामग्री, शोध-पत्र, समीक्षा-पत्र एवं अन्य प्रकाशनों को भी प्राणी शास्त्र विभाग को समर्पित किया.

इस अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि पुस्तक पढ़ना और बेहतर ढंग से जीना एक दूसरे के अभिन्न अंग हैं. जो जितना बेहतर पढ़ेगा उसका जीवन उतना ही समृद्ध होता जाएगा. इस दुनिया पर प्राधिकार के लिए इस दुनिया को जानना जरूरी है. जानने का यह रास्ता पुस्तकों से ही होकर जाता है. कार्यक्रम में पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मोहन टी. ए. ने स्वागत वक्तव्य दिया. कार्यक्रम का संयोजन डॉ राकेश सोनी ने एवं संचालन डॉ. आशुतोष ने किया. कार्यक्रम में प्रो. चन्दा बेन, प्रो. कालीनाथ झा, प्रो. जी एल पुणताम्बेकर, प्रो. बी. के श्रीवास्तव, प्रो. अनिल जैन, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस. पी उपाध्याय, डॉ. अनिल तिवारी, डॉ अनुराग, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. हिमाशु सहित बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे.

फार्मेसी के प्रो. पाटिल बने अमेरिकन हर्बल फार्माकोपिया के समीक्षा बोर्ड के सदस्य

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के फार्मेसी विभाग के प्रो. यू.के. पाटिल ने मिसिसिपी विश्वविद्यालय के ऑक्सफोर्ड

कॉन्फ्रेंस सेंटर में 15 से 18 अप्रैल तक आयोजित औषधीय और सुगंधित पौधों पर आयोजित 7वें विश्व कांग्रेस (WOCMAP-VII) और वानस्पतिक उत्पादों के विज्ञान पर आधारित 22वें वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया. प्राकृतिक उत्पाद अनुसंधान के लिए ऑक्सफोर्ड स्थित अमेरिकी राष्ट्रीय केंद्र के भ्रमण के बाद, प्रो. पाटिल ने वैज्ञानिको के साथ प्राकृतिक और

फाइटोमेडिसिन के क्षेत्र में संभावित सहयोगात्मक अनुसंधान पर पैनल चर्चा में भी भाग लिया. भविष्य में सागर का फार्मेसी विभाग, अमेरिकी राष्ट्रीय प्राकृतिक उत्पाद अनुसंधान केंद्र के साथ अपनी अनुसंधान गतिविधियाँ आयोजित करेगा. अमेरिकन हर्बल फार्माकोपिया के समीक्षा बोर्ड के सदस्य के रूप में शामिल प्रो. यू.के. पाटिल, मोनोग्राफ बनाने में अपने विशेषज्ञ इनपुट प्रदान करेंगे. यह बहुप्रतिक्षित है कि आगामी WOCMAP-IX के मेजबान एशियाई देश होंगे. चूंकि, भारत में स्वदेशी चिकित्सा प्रणाली के अलावा औषधीय वनस्पतियां और जीव भी समृद्ध हैं, आयुर्वेद महत्व, इंडियन आयुष प्रैक्टिसेज अनुप्रयुक्त अनुसंधान परिणाम, जैव विविधता आदि हमारे सकारात्मक और सहायक कारक हैं जो हमें भारत में WOCMAP-IX के लिए इस प्रतिष्ठित होस्टिंग अवसर को प्राप्त करने में मदद करते है. प्रो. पाटिल औषधीय और सुगंधित पौधों के लिए अंतर्राष्ट्रीय परिषद के गवर्निंग ब्यूरो सदस्य के रूप में भी योगदान दे रहे है. कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता और संकाय सदस्यों ने इस उपलब्धि के लिए प्रोफेसर पाटिल को बधाई दी है.

कम्प्यूटर विज्ञान में हैं रोजगार के भरपूर अवसर- कुलपति

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग में संचालित पाठ्यक्रम बी.सी.ए., एम.सी.ए. तथा पी.जी डिप्लोमा इन बिग डेटा एनालिटिक्स में प्रवेश प्रक्रिया CUET- UG/PG के माध्यम से होगी, बी.सी.ए. 4 वर्षीय पाठ्यक्रम जिसमें अधिकतम 75 सीटें उपलब्ध हैं इसी प्रकार 2 वर्षीय एम.सी.ए. पाठ्यक्रम में 50 सीटें उपलब्ध हैं एवं पी.जी. डी.बी.डी.ए. डिप्लोमा में अधितम 20 सीटें हैं. उपरोक्त कोर्सों में प्रवेश एन.टी.ए. द्वारा आयोजित परीक्षा CUET- UG/PG के प्राप्तांकों के आधार पर होगा.

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि उपरोक्त पाठ्यक्रम छात्रों को विभिन्न सरकारी संस्थानों एवं आईटी के विभिन्न क्षेत्र जैसे, बैकिंग, साईबर सिक्वेरिटी, डेटा ऐनालिटिक्स, आरटीफीशियल इंटेलिजेन्स, बिग डेटा और मशीन लर्निंग, प्रोग्रामिंग में कैरियर बनाने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है.

विश्वविद्याल का कम्प्यूटर विज्ञान विभाग आधुनिक संरचना से युक्त एवं नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित कम्प्यूटर प्रयोगशाला, नवीनतम पुस्तकालय सुविधा सहित एवं विभिन्न संसाधन प्रदान करता है. ताकि विद्यार्थियों को शिक्षा एवं रिसर्च के लिए उत्तम गुणवत्ता पूर्ण वातावरण मिल सके. विभाग में अनुभवी शिक्षकों की टीम जो छात्रों को गुणवत्ता परक शिक्षा एवं मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है. कम्प्यूटर विभाग में छात्रों के प्लेसमेंट के के लिए विभागीय स्तर एवं विश्वविद्यालय स्तर पर प्लेसमेंट सेल द्वारा कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिससे छात्रों का सीधे आईटी कंपनियों में प्लेसमेंट के अवसर प्रदान होते हैं. विगत वर्षों में विभिन्न कंपनियों जैसे इनफोसिस, टेक महिन्द्रा, बाईजूस, टीसीएस, ब्रेनडेस्क, साईबर सिक्वेरिटी प्रा. लि. जस्टडाईल, ट्राईफिड रिसर्च में छात्रों का चयन हुआ है.

उपरोक्त पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु इच्छुक विद्यार्थी विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट https://dhsgsu.edu.in से विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं.

पंचायती राज व्यवस्था से ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिला है - शिवशंकर जेना

केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर के समाजशास्त्र विभाग में पंचायती राज दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस के अवसर पर डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया. मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर दिवाकर सिंह राजपूत

की अध्यक्षता में संपन्न संगोष्ठी का आयोजन "समीक्षा" कार्यक्रम के अन्तर्गत किया गया. कार्यक्रम में विभागीय शिक्षक डॉक्टर शिवशंकर जेना ने पंचायती राज व्यवस्था के इतिहास एवं विकास पर चर्चा की. डॉक्टर जेना ने कहा कि पंचायती राज व्यवस्था के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तीकरण और सामाजिक आर्थिक विकास की गति तेज हुई है.

अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा कि भारत में पंचायती राज व्यवस्था का वर्तमान स्वरूप सत्ता के विकेंद्रीकरण और देश के विकास में सामाजिक सहभागिता को दर्शाता है. स्थानीय नेतृत्व और विकास के लिए अपनी-अपनी भूमिका का निर्वाह करने के साथ व्यक्तित्व विकास, सामाजिक सौहार्द के साथ ही देश प्रेम और राष्ट्रीय विकास की भावना सबल होती. अकादमिक चर्चा में डॉ कालीनाथ झा, उषा राणा, प्रियंका यादव, अमरमणि त्रिपाठी, अनुराधा शुक्ला, नेहा मालवीय, शाहरुख, प्रिया गर्ग, अर्पित, पूनम, सौरभ आदि ने विचार रखे. सौरभ असाटी ने आभार व्यक्त किया.

कुलपति ने किया संबंद्ध महाविद्यालयों का निरीक्षण

दिनाँक 25 अप्रैल 2024 को माननीय कुलपति महोदया प्रो. नीलिमा गुप्ता ने डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर से सम्बद्ध बीना के दो कालेजों पं भागीरथ बिलगैया मेमोरियल टेक्नीकल एण्ड प्रोफेसनल कॉलेज एवं एरीसेन्ट कॉलेज आफ एजूकेशन

बीना का औचक निरीक्षण किया. निरीक्षण के दौरान कॉलेज में विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध सुविधाओं जैसे पुस्तकालय, कंप्यूटर लेब, प्रेक्टिकल लेब, खेलकूद, साफ-सफाई, पीने का साफ पानी इत्यादि मूलभूत व्यवस्थाओं का निरीक्षण कर उनके समस्त रिकार्ड को भी चेक किया. कॉलेज के शिक्षकों की जानकारी ली. उन्होंने कॉलेज में चल रही कक्षाओं में मौजूद विद्यार्थियों से बात कर उपलब्ध व्यवस्थाओं एवं कमियों की जानकारी ली. निरीक्षण के दौरान उन्होंने पाया कि कॉलेज में विद्यार्थियों की कमी, कॉलेज में विद्यार्थियों के लिये मूलभूत सुविधाओं जैसे डिजिटल लाईबेरी, स्पोटर्स सुविधा, सांस्कृतिक/अकादमिक कार्यक्रमों का आयोजन, साफ-सफाई, इन्टरनेट सुविधाओं, कम्प्यूटर लेब, विज्ञान लेब के साथ-साथ योग्य शिक्षकों की कमी है. कुलपति महोदया ने कॉलेज व्यवस्थाओं को सुधारने एवं भारत सरकार के नियमानुसार कॉलेज में एन्टीरेगिंग सेल, ग्रेवियांस सेल, आंतरिक शिकायत प्रकोष्ठ, एनसीसी/एनएसएस, इन्टरनेट सुविधा, स्पोटर्स सुविधाओं में वृध्दि

इत्यादि आवश्यक कदम उठाने हेतु, कॉलेज प्रशासन को सख्त हिदायत दी एवं पुनः औचक निरीक्षण करने को कहा है. इसी प्रकार माननीय कुलपति महोदया विश्वविद्यालय से सम्बद्ध अन्य कॉलेजों का भी शीघ्र औचक निरीक्षण करेंगी.

गणित के नवाचारी शोध कर रहे हैं दुनिया की जटिल समस्याओं का समाधान- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

गणित और सांख्यिकी विभाग में पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के गणित एवं सांख्यिकी विभाग के रामानुजन संगोष्ठी कक्ष में 'एप्रॉक्सीमेशन टेक्निक टू सॉल्व प्रॉब्लम इन कंप्यूटेशनल फाइनेंस' विषय पर पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ देवी

सरस्वती एवं डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुआ. डॉ. शैलेश चौबे के निर्देशन में विद्यार्थियों ने सरस्वती वन्दना की प्रस्तुति दी. उदघाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि यूनिवर्सिटी ऑफ द वेस्टर्न केप साउथ अफ्रीका के प्रो. के. पाटीदार, विशिष्ट अतिथि आईआईटी इंदौर की डॉ. देवोप्रिया मुखर्जी, अधिष्ठाता प्रो. आर. के. गंगेले, भौतिक शास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो. आशीष वर्मा, गणित एवं सांख्यिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो. दिवाकर शुक्ला मंचासीन थे.

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि हम सब अपनी जिन्दगी में एप्रॉक्सीमेशन पद्धति का उपयोग करते हैं. गणित एक ऐसा विषय है जिसके आधारभूत सिद्धांत से हर व्यक्ति परिचित होता है. किसी भी गणितीय सूत्र में जाने के पहले हमें सबसे पहले खुद का एप्रॉक्सीमेशन करना होता है. यह एक ऐसी पद्धति है जिसमें हम अपनी क्षमता, कार्यकुशलता, ऊर्जा का आंकलन करते हुए कार्य की सफलता के बारे में अनुमान लगाते हैं. इसी की गणितीय

पद्धति एप्रॉक्सीमेशन है. यह आज के समय का ज्वलंत और उभरता हुआ विषय क्षेत्र है जिस पर दुनिया के बहुत सारे विशेषज्ञ

कार्य कर रहे हैं क्योंकि यह भविष्य में क्या घटित होगा, इसका आंकलन है. इसमें गणित, भौतिक शास्त्र, कम्प्यूटर साइंस, सांख्यिकी, डाटा साइंस जैसे ज्ञान-विज्ञान के कई अनुशासनों का समावेश है. इस पद्धति से कई सॉफ्टवेयर भी विकसित किये जा रहे हैं. आज गणित के नवाचारी शोध दुनिया की कई जटिल समस्याओं का समाधान कर रहे हैं. इस कार्यशाला में सम्मिलित होने विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए यह एक सुनहरा अवसर है कि वे इस क्षेत्र में कार्य करते हुए अपना बेहतर योगदान दें.

मुख्य अतिथि प्रो. पाटीदार ने कहा कि किसी भी समस्या के समाधान और परिणाम का आंकलन करते हुए उसकी पद्धति विकसित करना सबसे कठिन एवं चुनौतीपूर्ण कार्य है. दुनिया के कई वैज्ञानिक एप्रॉक्सीमेशन के विषय पर कार्य करते हुए इस

सिद्धांत को आगे बढ़ाया है. यह एक ऐसा विषय है जिसमें कई तरह के विषयों का समावेश है. इस सिद्धांत में डाटा कलेक्शन, डाटा सेट्स, सांख्यिकी जैसे चीजों का उपयोग किया जाता है तब जाकर हम इसके अनुप्रयोग पर कार्य कर सकते हैं. यह कार्यशाला एक अवसर है जिसमें विद्यार्थी अपने आइडिया को साझा करते हुए शोध की दिशा को तय कर सकते हैं.

विशिष्ट अतिथि डॉ. देवोप्रिया मुखर्जी ने कहा कि इस विषय पर चर्चा 1950 के दशक से ही शुरू हो गई थी लेकिन कम्प्यूटर विज्ञान के आगमन के बाद 2014 और 2020 में इस विषय पर गहराई से अध्ययन किया गया. आज यह सबसे आवश्यक विषय बन गया है. उन्होंने कहा कि गणित में महिलाओं की भूमिका और योगदान पर भी चर्चा आवश्यक है और उनकी सशक्त भूमिका और योगदान के लिए भी वे कार्य कर रही हैं. प्रो. आशीष वर्मा ने विषय के महत्त्व को रेखांकित किया और मौजूदा समय में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि इस सिद्धांत को आगे बधान एमें कई

भौतिक शास्त्रियों का भी योगदान है. आज आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के जमाने में इस विषय का महत्त्व और अधिक बढ़ गया है. स्वागत वक्तव्य में प्रो. दिवाकर शुक्ला ने पांच दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की और विषय को मनुष्य की

दैनंदिन जरूरतों के उदाहरण के माध्यम से प्रस्तुत किया. स्टॉक एक्सचेंज, वित्त प्रबंधन, इंश्योरेंश, म्यूचुअल फंड इत्यादि ऐसे क्षेत्र हैं जहां इस पद्धति का प्रयोग किया जा रहा है.

वैदिक अध्ययन विभाग की शिवानी खरे ने कार्यक्रम का संचालन किया. प्रो. आर. के गंगेले ने आभार वक्तव्य देते हुए बताया कि इस कार्यशाला में देश-विदेश के लगभग 100 से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीयन कराया है जिसमें मुख्य रूप से मलेशिया,

स्कॉटलैंड, वेस्ट-इंडीज आईआईटी इंदौर, आईआईटी धनबाद, मुंबई यूनिवर्सिटी, मेरठ कानपुर, अमेठी, पटना, बिलासपुर, पूना, बैंगलोर, कोयंबटूर इत्यादि प्रमुख संस्थानों से प्रतिभागी हिस्सा लेंगे. यह कार्यशाला हाइब्रिड मोड मे आयोजित की जा रही है. कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों में मैथमेटिकल फाइनेंशियल मॉडलिंग की विशेष ट्रेनिंग दी जानी है जिससे उनके शोध में विशेष दिशा के नए आयाम खुलेंगे एवं उनको किसी विशिष्ट फाइनेंशियल रोजगार के अवसर प्रदान करेंगे. इससे कॉरपोरेट जगत में फंड मैनेजर, इक्विटी एनालिस्ट, टेक्निकल एनालिस्ट इत्यादि जगहों में बेहतर रोजगार की संभावनाएं बढ़ेंगी. इस अवसर पर प्रो. पी. के. कठल, प्रो. ए.पी. मिश्रा, प्रो. रणवीर कुमार, प्रो. राजेश गौतम, प्रो. अजीत जायसवाल, डॉ. अभिषेक बंसल, डॉ. आर. के. पाण्डेय सहित कई शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.

दूरस्थ शिक्षा में प्रवेश हेतु महार रेजीमेंट में कार्यशाला का आयोजन

भारतीय सेना के अग्निवीरों, सैनिकों के परिवारों, सैन्य अधिकारियों के शैक्षणिक, व्यावसायिक एवं तकनीकी कौशल को

विकसित करने हेतु डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर और महार रेजिमेंट केंद्र के साथ दूरस्थ शिक्षा के लिए किए गए अकादमिक समझौते के तहत पाठ्यक्रम उन्नयन कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में वक्तव्य देते हुए दूरस्थ शिक्षा संस्थान के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा ने विश्वविद्यालय के आयोजित किए जा रहे विभिन्न पाठ्यक्रमों, उनकी संरचना, परीक्षा, रोजगार संभावना आदि के विषय में सैनिकों को उन्मुख किया. भारतीय सेना की एक इकाई के रूप में महार

रेजीमेंट जहां जाबाज एवं कुशल सैनिक तैयार कर रही है वहीं एक विश्वविद्यालय के रूप में दूरस्थ शिक्षा संस्थान अपनी भूमिका का निर्वाह करते हुए उन्हें शैक्षणिक, व्यावसायिक एवं तकनीकी दक्षता के साथ डिग्री भी प्रदान करेंगे. इस कार्यशाला में पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. ज्ञानेश तिवारी ने मनोविज्ञान, परामर्श एवम् निदर्शन विषयक पाठ्यक्रम तथा डॉ. शालिनी चौईथरानी ने वैयक्तिक प्रबंधन विषय पाठ्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की. कार्यक्रम का संचालन महार रेजिमेंट केंद्र के श्री बरूण सिंह ने किया.

नई प्रविधियों के संयोजन से और समृद्ध होगी भारतीय ज्ञान परंपरा- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के गणित एवं सांख्यिकी विभाग के रामानुजन संगोष्ठी कक्ष में 'एप्रॉक्सीमेशन टेक्निक टू सॉल्व प्रॉब्लम इन कंप्यूटेशनल फाइनेंस' विषय पर पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन कार्यक्रम

आयोजित हुआ जिसमें केन्द्रीय विश्वविद्यालय पंजाब के कुलपति प्रो. आर. पी. तिवारी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. इस अवसर पर ज्ञानवीर विश्वविद्यालय सागर के कुलपति प्रो. आर. के. त्रिवेदी, यूनिवर्सिटी ऑफ द वेस्टर्न केप साउथ अफ्रीका के प्रो. के. पाटीदार, विशिष्ट अतिथि आईआईटी -आई एस एम धनबाद के प्रो. गजेन्द्र विश्वकर्मा मंचासीन थे. विभागाध्यक्ष प्रो. दिवाकर शुक्ला ने स्वागत वक्तव्य दिया. अधिष्ठाता प्रो. आर. के. गंगेले ने पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कई जानकारियों को साझा किया.

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने पाँच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में देश- विदेश से पधारे और ऑनलाइन माध्यम से जुड़े सभी विषय विशेषज्ञों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह कार्यशाला निश्चित रूप से प्रतिभागियों एवं विद्यार्थियों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी. देश के कई प्रतिष्ठित और शीर्ष संस्थानों के विशेषज्ञों ने एक ऐसे विषय पर हमारे विद्यार्थियों और प्रतिभागियों को लाभान्वित किया जिसकी आने वाले समय में बहुत माँग है. उन्होंने कहा कि एप्रॉक्सीमेशन एक ऐसा विषय है जिसकी हमें हर पल जरूरत पड़ती है. प्राचीन समय से ही हम इस पद्धति का प्रयोग करते रहे

हैं. नई तकनीक एवं आधुनिक प्रविधियों के संयोजन से भारतीय ज्ञान परम्परा और अधिक समृद्ध होगी इसलिए विद्यार्थी नवाचारी शोध करते हुए इसे आगे बढ़ाएं. उन्होंने कार्यशाला में सम्मिलित होने विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वे इस क्षेत्र में कार्य करते हुए अपना बेहतर योगदान दें.

मुख्य अतिथि प्रो. आर. पी. तिवारी ने कहा कि जीवन में सब कुछ एप्रॉक्सीमेशन पर निर्भर करता है. इसमें आधारभूत जानकारी, अनुमान जैसे चीजों का ज्ञान भी आवश्यक है. भारतीय ज्ञान परम्परा में इस पद्धति का प्रयोग किया जाता था. हम अपनी दिनचर्या जैसे अनाजों के रख-रखाव, भोजन बनाने, मौसम का नुमान, जैसी चीजों में भी इस पद्धति का उपयोग काफी पहले से करते आये हैं. वही प्राचीन पद्धति अब नए तकनीक के साथ जुड़कर नया एवं आधुनिक ज्ञान के रूप में विकसित हो रहा है. महाकवि तुलसीदास ने सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी का अनुमान इसी पद्धति के आधार पर बतलाया था. यह कार्यशाला एवं लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म है जहां विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों ने बहुत कुछ सीखा है. वे एक सभ्य समाज के निर्माण और समाज की जटिल समस्याओं को सुलझाने में नवीन ज्ञान का प्रयोग करें. उन्होंने छात्रों को साइंटिफिक टेम्पर विकसित करने और चिंतन प्रक्रिया में भाग लेने पर जोर दिया.

प्रो. आर के त्रिवेदी ने कहा कि यह कार्यशाला भारतीय ज्ञान पद्धति को संरक्षित रखते हुए नवीन ज्ञान विकसित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है. कार्यशाला के स्वरुप में किया गया यह आयोजन इस रूप में भी महत्त्वपूर्ण है कि प्रतिभागियों ने इसमें अंतर्क्रिया के माध्यम से, संवाद के माध्यम से बहुत कुछ सीखा है. उन्होंने विभाग को ऐसी ही महत्त्वपूर्ण आयोजन करने हेतु शुभकामनाएं दीं.

इस अवसर पर वाह्य विषय विशेषज्ञ प्रो. के. पाटीदार, प्रो. गजेन्द्र विश्वकर्मा ने भी संबोधित किया. उन्होंने कहाकि इस सीख को विद्यार्थी आगे बढ़ाएं और नए सिद्धांतों एवं मॉडल को विकसित करें. उन्होंने कार्यशाला के सफल आयोजन एवं प्रतिभागी छात्र-छात्राओं की ऊर्जा, लगन और उत्साह हेतु बधाई देते हुए उनके मंगलमय भविष्य की कामना की. प्रतिभागियों की तरफ से डॉ. स्वीटी मिश्रा ने फीडबैक प्रस्तुत किया. आभार डॉ. आर. के. पाण्डेय ने ज्ञापित किया. संचालन शिवानी खरे ने किया. कार्यक्रम में सर्वश्रेष्ठ पोस्टर के लिए प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया.

इस अवसर पर प्रो. ए.पी. मिश्रा, प्रो. रणवीर कुमार, प्रो. डी. के नेमा, डॉ संध्या पटेल, प्रो. सुशील काशव, डॉ. अभिषेक बंसल, डॉ. आर. के. पाण्डेय, डॉ. विवेक तिवारी, सहित कई शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.

--------//--------

खबरों में विश्वविद्यालय

आयोजन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विज्ञानियों ने रखें विचार, कोविड ने दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा का महत्व बढ़ाया

कोविड में एक नई तकनीक से किया अध्ययन-अध्यापन

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम में नवाचार एवं परिप्रेक्ष्य विषय पर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान, नोएडा एवं कामनवेल्थ एजुकेशन मीडिया सेंटर फार एशिया के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन नोएडा के कल्याण सिंह सभागार में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता के रूप में बोलते हुए डा. हरीसिंह गौर विवि की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि वर्ष 2024 में दूरस्थ शिक्षा की विश्व रैंकिंग में भारत का तीसरा स्थान है। इस क्षेत्र में कई भारतीय राज्यों ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है उनमें केरल एवं आंध्र प्रदेश जैसे राज्य अग्रणी है। आंध्रप्रदेश ने सबसे पहले आंध्रप्रदेश में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की। विश्वव्यापी कोविड संकट के समय ने हमें दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा के महत्व को और अधिक प्रासंगिक बना दिया, जिससे शिक्षक और छात्रों ने एक नई तरह की तकनीकों के माध्यम से अपना अध्ययन-अध्यापन का कार्य किया।

विवि में मिलने वाली सुविधाओं पर चर्चा

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के डिजिटल इंडिया मिशन के मूल उद्देश्यों को साकार करने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे डिजिटल नवाचारों का भी जिक्र किया। साथ ही देश की सेवा में रत अपने सैनिकों के शैक्षिक उत्थान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं महार रेजिमेंट के साथ ही साथ अग्निवीर सैनिकों, केंद्रीय जेल में सजा काट रहे कैदियों के लिए दूरस्थ शिक्षा में नए पाठ्यक्रमों के संचालन के लिए किए गए अकादमिक समझौतों से विश्वविद्यालय एवं सैनिकों को मिलने वाली सुविधाओं की भी चर्चा की। इस अवसर पर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान, नोएडा की अध्यक्ष प्रोफेसर सरोज शर्मा, तेजपुर विश्वविद्यालय असम के कुलगुरु प्रो. शम्भू नाथ सिंह, डा. बशीर अहमद, एनइटीएफ के अध्यक्ष प्रो. अनिल डी. सहस्त्रबुद्धे, सीवीइटी के अध्यक्ष आइएएस डा. निर्मल सिंह कालसी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सीओएल कनाडा के अध्यक्ष प्रो. पीटर स्काट और निदेशक (शिक्षा) डा. टोनी मेस वर्चुअल माध्यम से जुड़े रहे।

कोविड ने मुक्त शिक्षा के महत्व को प्रासंगिक बनाया : कुलपति

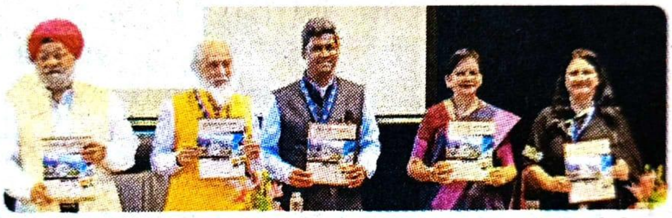

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय की कुलपति नोएडा के राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान में आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में शामिल हुई। मुक्त व दूरस्थ अधिगम में नवाचार एवं परिप्रेक्ष्य विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में बतौर विशिष्ट वक्ता ने कहा 2024 में दूरस्थ शिक्षा की विश्व रैंकिंग में भारत का तीसरा स्थान है। आज अधिकतम राज्यों में दूरस्थ शिक्षा के लिए विभिन्न संस्थान अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं, जिसमें डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि भी 5 से अधिक ज्ञाननुशासनों में अध्ययन-अध्यापन का करा रहा है। उन्होंने कहा विश्वव्यापी कोविड संकट के समय ने हमें दूरस्थ व मुक्त शिक्षा के महत्व को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है। नई तकनीकों के माध्यम से अपना अध्ययन-अध्यापन का काम किया।

शोधार्थी दीपांजलि दास का शोध कार्य पूर्ण

जागरण, सागर। डॉ.हरीसिंह गौर विवि के मानव विज्ञान विभाग की शोधार्थी सुश्री दीपांजलि दास ने नियमगिरि पहाड़ियों की डोंगरिया कोंध जनजाति विषय पर पीएच-डी पूरी कर ली है। विश्वविद्यालय के मानवविज्ञान विभाग से प्रो.राजेश कुमार गौतम के मार्गदर्शन में उनका शोध, पीवीटीजी और भारत के ओडिशा के जिला रायगढ़ की पड़ोसी गैर आदिवासी आबादी के बीच यौवन की शुरुआत और इसके निर्धारकों पर केंद्रित है। सुश्री दास का शोध मानवविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देता है, युवावस्था के विकास की जटिलताओं पर प्रकाश डालता है और आदिवासी आबादी, विशेष रूप से ओडिशा में डोंगरिया कोंध जनजाति की भलाई को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भविष्य के हस्तक्षेप और नीतियों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

राष्ट्रीय युवा उत्सव में डॉ. हरीसिंह गौर विवि के छात्र-छात्राओं ने 7 विधाओं में की सहभागिता, सभी पदक जीते

भास्कर संवाददाता | सागर

राष्ट्रीय युवा उत्सव लुधियाना में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय ने 7 विधाओं में पदक प्राप्त किए। पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी लुधियाना में 28 मार्च से 1 अप्रैल तक पांच दिवसीय 37वां अंतरविश्वविद्यालयीन राष्ट्रीय युवा उत्सव आयोजित हुआ। इसमें पूरे देश से लगभग 116 विश्वविद्यालयों के छात्र छात्राओं ने 28 विधाओं में सहभागिता की। संगीत विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ अवधेश प्रताप सिंह तोमर एवं डॉ राहुल स्वर्णकार के मार्गदर्शन में तैयार संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने संगीत की विधाओं के अंतर्गत एकल सुगम गायन, एकल बांसुरी वादन, समूह लोक वाद्य वादन में स्थान प्राप्त किया। नाट्य दल ने डॉ राकेश सोनी के मार्गदर्शन में प्रहसन (स्किट) में जीत दर्ज की। दल प्रभारी यश गोपाल श्रीवास्तव के नेतृत्व में विवि के दल में 30 विजयी छात्र छात्राओं की सहभागिता हुई। संगीत की विधाओं के अंतर्गत समूह फोक ऑर्केस्ट्रा में गगन, संजय, ओम, पंकज, मैकलीन, गोलू, यश, विधान, शुभम, रिद्धि, प्रांजलि, देवेंद्र ने तृतीय स्थान, एकल स्वर वाद्य (बांसुरी) में पंकज ने तृतीय स्थान, सुगम गायन में स्तुति ने तृतीय स्थान, नाटक विधा के अंतर्गत प्रहसन (स्किट) में अर्पित, संजय, अनुज, देवव्रत, दीपेंद्र, अनुराग ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी तरह लोक नृत्य में बधाई को द्वितीय स्थान मिला, जिसमें छात्र देवव्रत, अमन, अनुराग, ऋषभ, राहुल, अपर्णा, अनन्या, अमिता, प्रांजलि, प्रियांशी शामिल रहे। रंगोली में ललित ने तृतीय एवं इंस्टालेशन में कृष्णा, गगन चौधरी, ललित ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसके अलावा सांस्कृतिक रैली में 116 विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान अर्जित किया। विवि के सांस्कृतिक समन्वयक डॉ राकेश सोनी ने बताया कि इस उपलब्धि के लिए सभी छात्रों ने दिन रात मेहनत की है और राष्ट्रीय स्तर पर सात चयनित विधाओं में से सभी में जीत कर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।

नवाचार को निरंतर बढ़ाएं, इससे विवि की शोधपरक गतिविधियों को नया आयाम दिया जा सकेगा: कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने डेटा डायलॉग कार्यशाला एवं ज्ञान समृद्धि कार्यशाला के पोस्टर का विमोचन किया। कुलपति ने इस नवाचार को निरंतर बढ़ाने का आह्वान करते हुए कहा इस प्रकार के प्रयासों से विश्वविद्यालय की शोध परक गतिविधियों को नया आयाम दिया जा सकेगा।

विश्वविद्यालय स्थित जनसंख्या अनुसंधान केंद्र, सागर द्वारा डेटा डायलॉग कार्यशाला की गई। इसके माध्यम से केंद्र की शोध गतिविधियों के लिए एकत्रित डेमोग्राफिक एवं स्वास्थ्य डेटा की जानकारी फैकल्टी एवं शोधार्थियों को दी गई। जनसंख्या अनुसंधान केंद्र के निदेशक प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज ने डेटा डायलॉग की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा इस केंद्र द्वारा विभिन्न शोध प्रोजेक्ट्स के लिए एकत्रित डेटा को विश्वविद्यालय के अन्य विभागों की शोध गतिविधियों के परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है। केंद्र की सहायक निदेशक डॉ. रीना बासु ने बताया कि केंद्र की डेटा एकत्रित करने की प्रविधियों को विभिन्न शोध प्रोजेक्ट्स के विषय को ध्यान में रखते हुए निरंतर अद्यतन किया जाता है। केंद्र द्वारा देश में स्थित अन्य पीआरसी के साथ मिलकर देशव्यापी शोध भी किए जा रहे हैं। इस प्रकार के शोध प्रोजेक्ट्स के डेटा द्वारा विभिन्न स्तरों पर डेमोग्राफिक एवं स्वास्थ्य की स्थिति में बदलाव का विश्लेषण किया जाना संभव है। डॉ. निखिलेश परचुरे, शोध अन्वेषक द्वारा बताया गया कि शोध के प्रारम्भ करने के पूर्व भी डेटा की प्रमाणिकता, पूर्णता और सामयिकता के बारे में शोधार्थियों को प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है।

सागर। कुलपति प्रो. गुप्ता ने डेटा डायलॉग एवं ज्ञान समृद्धि कार्यशाला के पोस्टर का विमोचन किया।

उपलब्ध डेटा को शोध के लिए उपयोग करने के पूर्व इसके बारे में पूर्ण जानकारी जैसे डेटा कब, किसके द्वारा, कहां से और कैसे एकत्रित किया गया, होना आवश्यक है। प्रत्येक एकत्रित डेटा का मेटा डेटा भी उपलब्ध होना महत्वपूर्ण है। मेटा डेटा के माध्यम से डेटा के बारे में कई महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त होती हैं जो डेटा के उपयोग करते समय सहायक होती हैं।

इस कार्यशाला में निदेशक फेकल्टी अफेयर प्रोफेसर अजित जायसवाल तथा निदेशक अकादमिक गतिविधि प्रोफेसर नवीन कांगो तथा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक विभागों से फेकल्टी तथा शोधार्थियों ने डेटा की उपलब्धता और उसके शोध कार्य के लिए उपयोग के बारे में अपने विचार रखे।

फार्माकोलाजी रिसर्च में डा. हरीसिंह गौर विवि सागर देश के टाप 10 में शामिल

एडु रैंक संस्था ने 183 देशों की शैक्षणिक संस्थाओं की 2024 की रैंकिंग सूची की जारी

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर को विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों में अग्रणी रैंकिंग मिली है। एडु रैंक संस्था द्वारा देश भर के शैक्षणिक संस्थाओं की वर्ष 2024 की रैंकिंग जारी की गई है। एडु रैंक एक स्वतंत्र संस्था है जो 183 देशों की शैक्षणिक संस्थाओं की रैंकिंग को जारी करती है। विवि की शैक्षणिक गुणवत्ता में बेहतर सुधार होने से कई सालों बाद यह उपलब्धि मिली है।

डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर का फाइल फोटो। ● नवदुनिया

जानकारी के अनुसार इस रैंकिंग में विश्वविद्यालय का रिसर्च पब्लिकेशन और साइटेशन के आधार पर रिसर्च आउटपुट, प्रशासनिक प्रतिष्ठा एवं ख्यातिनाम एलुमनाई के प्रभाव जैसे मानकों को शामिल किया गया है। इस रैंकिंग में विवि में हो रहे शोध एवं अनुसंधान के 78 विषयों को शामिल किया गया है, जिसमें 50 प्रतिशत से अधिक टाप स्कोर मिला है। हालांकि भारत सरकार की एनआइआरएफ की रैंकिंग अलग से जारी की जाती है, जिसमें विवि को अलग से ग्रेड जारी की जाती है।

बेहतर शोध कार्यों की वजह से बढ़ा विवि का कदः एडु रैंक संस्था द्वारा अलग-अलग अध्ययन क्षेत्रों के अंतर्गत उप विषयों में होने वाले शोध एवं प्रकाशन को मानक मानते हुए रैंकिंग की गई है। बायोलाजी अनुशासन में फार्माकोलाजी से संबंधित अध्ययन एवं शोध में विश्वविद्यालय ने टाप 10 में जगह बनाई है। बायोटेक्नोलाजी विषय में देश भर में 17 वीं रैंकिंग है। इसी तरह बायोमेडिकल इंजीनियरिंग से संबंधित अध्ययन एवं शोध में देश भर में 25 वीं और नैनो टेक्नोलाजी 33वीं रैंकिंग है। **कासमेटोलाजी, साइकियाट्री जैसे विषय टाप 50 में शामिल :** इसके अलावा जिन विषयों में अच्छी रैंकिंग हैं उनमें बायो इन्फार्मेटिक्स एंड काम्प्यूटेशनल बायोलाजी में देश भर में 16 वीं, वायरोलाजी में 22वीं, बायोफिजिक्स में 26 वीं, कासमेटोलाजी में 13वीं, साइकियाट्री में 18वीं रैंकिंग हासिल हुई है। केमिकल इंजीनियरिंग, माइक्रोबायोलाजी, एन्टोमोलोजी, आनकोलाजी एंड कैंसर रिसर्च, न्यूरोसाइंस, जेनेटिक्स, रेडिएशन थेरेपी, प्लास्टिक सर्जरी, इम्यूनोलाजी, एनेस्थीसियोलाजी जैसे क्षेत्रों में शोध के लिए देश भर में टाप 50 में जगह मिली है।

नेक टीम द्वारा मिला ए प्लस

विवि द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में लगातार सुधार कार्य किए जाने के साथ नए विषयों, नए छात्रावास से लेकर अन्य कई सुविधाओं को उपलब्ध कराने पर नेक टीम द्वारा इस वर्ष ए प्लस भी दिया गया है। इसके बाद से देशभर के कैंद्रीय विवि में सागर विवि की साख में सुधार हुआ है और कई राज्यों से टाप करने वाले विद्यार्थियों द्वारा विवि में प्रवेश लेने में दिलचस्पी दिखाई है।

सभी विषयों में श्रेष्ठतम रैंकिंग हासिल करेंगे

विवि में हो रहे अंतरानुशासनिक एवं नवाचारी शोधों से विविध ज्ञान क्षेत्रों में विवि की उपस्थिति दर्ज हो रही है। शोध के कुछ नए पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किए गए हैं, साथ ही कई परियोजनाएं भी चल रही हैं। आगामी दिनों में विवि अन्य सभी विषयों एवं क्षेत्रों में प्रत्येक रैंकिंग मानक को पूरा करते हुए श्रेष्ठतम रैंकिंग हासिल करेगा।

– प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति डा. हरीसिंह गौर केंद्रीय विवि।

विद्यार्थियों ने नुक्कड़ नाटक से दिया संदेश- मेरा पहला वोट देश के लिए

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विवि सागर में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं युवा खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा शहीद दिवस की श्रृंखला में स्वच्छता कार्यक्रम एवं मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य चुनावी प्रक्रिया में मतदाताओं की भागीदारी के माध्यम से राष्ट्रीय विकास को बढ़ाना है। जिसके अंतर्गत विश्वविद्यालय राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने विश्वविद्यालय के समीप स्थित गांव पथरिया में 7 अप्रैल को आपका वोट आपका अधिकार को लेकर मतदान जागरूकता रैली निकाली।

शोधार्थियों में रोजगार परक शोध कौशल संबर्द्धन आवश्यक: नीलिमा गुप्ता

सागर, देशबन्धु। जनसंख्या अनुसंधान केंद्र एवं भूगोल विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हो रही तीन दिवसीय ज्ञान समृद्धि कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया। उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा की आज अकादमिक ज्ञान के साथ साथ नियोक्तापरक आवश्यकतों को ध्यान में रख कर भी हमें शिक्षा में रोजगार परक कौशल संबर्द्धन करना होगा। शोधार्थियों से इस कार्यशाला के माध्यम से नये विषयों को समझने और उनके बारे में शोध की संभावनाओं पर गहन विमर्श करने का सुझाव दिया। प्रो. शुक्ला ने पीआरसी, सागर के प्रथम दशक में किए गए शोध संग्रह को अपनी तरह का प्रथम प्रयास बताते हुए इसे निरंतर बनाए रखने के महत्व को रखांकित किया। प्रो. शर्मा ने पीआरसी में किए जा रहे शोध का देश की नीति निर्धारण में योगदान को महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम का संचालन कार्यशाला के समन्वयक डॉ. हेमन्त पाटीदार ने किया तथा डॉ. आरबी अनुरागी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

बिना किसी भेदभाव मतदान की स्वतंत्रता लोकतंत्र को विशिष्ट बनाती है: कुलपति

विवि : मतदान जागरूकता सप्ताह के पहले दिन रैली एवं नुक्कड़ नाटक हुआ

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में मतदान जागरूकता सप्ताह के पहले दिन दिव्यांग मतदाता ट्राइसाइकिल रैली तथा नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। आयुक्त एवं रोल प्रेक्षक डॉ. वीरेन्द्र सिंह रावत तथा कुलपति डॉ. नीलिमा गुप्ता ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। साथ ही दिव्यांगों की ट्राइसाइकिल को थामकर अभिमंच सभागार तक लाए।

सागर। विवि में मतदाता जागरूकता अभियान में निकली रैली में शामिल हुए दिव्यांगों को ट्राइसाइकिल पर बैठाकर कमिश्नर एवं कुलपति साथ चले।

अभिमंच सभागार के बाहर विवि के एनएसएस के स्वयंसेवकों ने मतदाता जागरूकता की थीम पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन करके समाज को संदेश दिया कि नोट, शराब, कपड़े एवं अन्य किसी भी लालच में आए बिना राष्ट्रहित में निर्भीक एवं निष्पक्ष रहकर मतदान करें। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. रावत ने कहा दिव्यांगजन जहां एक ओर बड़ी संख्या में मतदान कर रहे हैं वहीं सभी को मतदान करने की प्रेरणा देने के लिए मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों में सहभागी बनकर अनूठा कार्य कर रहे हैं। कुलपति गुप्ता ने कहा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 326 के द्वारा भारतीय नागरिकों को मतदान करने का अधिकार दिया गया है, जो लोकतंत्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। बिना किसी भेदभाव के मतदान करने की स्वतंत्रता भारतीय लोकतंत्र को विशिष्ट बनाती है। जिला स्वीप नोडल अधिकारी पीसी शर्मा ने कहा कि वर्ष 2011 के पश्चात स्वीप गतिविधियों के कुशल संचालन नें मतदान प्रतिशत में आशातीत वृद्धि की है। कार्यक्रम में सहायक नोडल अधिकारी डॉ. अमर कुमार जैन, डीएसडब्ल्यू प्रो. एडी शर्मा, एनएसएस अधिकारी डॉ. संजय शर्मा, डॉ. पंकज तिवारी, डॉ. अभिषेक जैन, डॉ. विवेक जायसवाल, समर्थ दीक्षित आदि मौजूद थे।

विवि दिव्यांग छात्रों को हर संभव सुविधाएं प्रदान करेगा : कुलपति

जागरण, सागर। डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों ने कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता से प्रशासनिक भवन में मुलाकात की। दिव्यांग छात्रों के साथ हुई चर्चा में कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने बताया कि उन्होंने विश्वविद्यालय में अध्ययनरत सभी दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए आवश्यक सुविधाएं तत्काल मुहैया करने के आदेश दिए हैं। विश्वविद्यालय पुस्तकालय के नवनिर्मित भवन में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विशेष अध्ययन केंद्र शुरू किया जा रहा है। इस अध्ययन केंद्र में दिव्यांग विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु सभी जरूरी सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएंगी। विश्वविद्यालय परिसर में शीघ्र ही दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए एक कौशल विकास केंद्र शुरू करने की कार्यवाही प्रारम्भ कर दी गयी है जिससे इन विद्यार्थिओं को अपनी प्रतिभा के आधार पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जायेंगे। छात्रावासों में खेल सुविधाओं को लेकर उन्होंने कहा कि दिव्यांग विद्यार्थियों को खेल विभाग से सभी आवश्यक सुविधाएं छात्रावास प्रशासन की मांग पर उपलब्ध करायी जाएंगी। कम्प्यूटर, ब्रेल लिपि की पुस्तकों सहित सभी आवश्यक अध्ययन सुविधाओं को उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य प्रारम्भ हो चुका है। दिव्यांग छात्रों की इस मुलाकात के अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो.अम्बिकादत्त शर्मा एवं कुलानुशासक मंडल के सदस्य प्रो.राजेन्द्र यादव उपस्थित रहे।

फार्मेसी विभाग एडुरैंक की रैकिंग में शीर्ष दस में शामिल

सागर, आचरण संवाददाता।

देश के अग्रणी फार्मेसी संस्थानों में शुमार डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के फार्मेसी विज्ञान विभाग पिछले सात दशकों से फार्मेसी शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अहम योगदान करता आ रहा है। इस विभाग को भारत के प्रतिष्ठित विशेषज्ञ शिक्षकों ने अपनी विशिष्ट कार्य शैली से संवारा है। यह विभाग देश के उन चुनिंदा शिक्षा संस्थानों में से है जहां भारत के फार्मेसी शिक्षा के पितामह प्रो. एम.एल. श्राफ ने विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया साथ ही साथ पद्मश्री प्रो. हरिकिशन सिंह ने अपनी उत्कृष्ट सेवाएं देते हुये विभाग को प्रगति पथ पर अग्रसर करने में अहम भूमिका निभाई. विभिन्न शोध विशेषताओं के आधार पर विभागीय शिक्षकों ने नोवल ड्रग डिलेवरी, कम्प्यूटर एडेड ड्रग डिजाईन, मेडिसिनल प्लांट रिसर्च, मेडिसिनल केमिस्ट्री के क्षेत्र में अनेक शोध उपलब्धियां अर्जित की हैं जो कि अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित है. विभाग के कई शोध, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त है. इस विभाग के शिक्षकों एवं शोधार्थियों को कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा विभाग के प्रो. संजय जैन को राष्ट्रीय स्तर के विजिटर अवार्ड से राष्ट्रपति भवन में आयोजित विशेष सम्मान समारोह में नवाजा गया. इसके साथ ही शिक्षकों को उत्कृष्ट सेवा अवार्ड, उत्कृष्ट शोध अवार्ड, यंग साईंटिस्ट अवार्ड जैसे सम्मानों से अनेकों बार सम्मानित किया गया है. विभाग के शिक्षक देश-विदेश की विभिन्न व्यावसायिक रेग्यूलेटरी एवं शैक्षिक परिषदों के महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित करते रहे हैं. विभाग के पुरा छात्रों का एक स्ट्रांग एल्यूमनी कनेक्ट स्थापित है जिसके तहत विभिन्न विकास आधारित गतिविधियों में वर्तमान विद्यार्थियों के बहुमुखी उत्थान के लिये कार्य किया जा रहा है. प्रतिवर्ष विभाग के 90 प्रतिशत से अधिक छात्र जीपेट एवं गेट जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होते रहे है. विभाग में शोध परियोजनाओं के तहत विभिन्न महत्वपूर्ण शोध उपलब्धियां अर्जित हुई हैं जिन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर औद्योगिक दृष्टिकोण से सराहा गया है।

हाल ही में विभाग ने एडूरैंक संस्था द्वारा देश भर के शैक्षणिक संस्थानों के वर्ष 2024 की रेंकिंग में टाप 10 में स्थान प्राप्त किया है. पूर्व में भी विभाग को राष्ट्रीय स्तर पर एन.आई.आर.एफ. रैकिंग में 11 वॉ स्थान प्राप्त हो चुका है. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने उक्त उपलब्धि पर प्रसन्नता वक्त करते हुये विभाग के शिक्षकों एवं शोधार्थियों को विभाग पहुँच कर बधाई दी।

टूवा इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी में पुरस्कार जीते

भोपाल के टूवा इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी में ए आई सी टी ई एवं सोसाइटी फॉर एथोनो फार्मेकोलोजी के द्वारा प्रायोजित नेशनल कान्फ्रेंस दिनांक 14 एवं 15 अक्टूबर को आयोजित की गई जिसमें विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के शोध विद्यार्थियों ने भाग लिया. ओरल प्रजेन्टेशन में देवयानी राजपूत को प्रथम एवं रश्मि रावल को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ. पोस्टर प्रजेन्टेशन में प्रियंदर्शी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ. विभाग के लगभग 12 शोद्यार्थियों ने विभाग के डॉ. सुशील कुमार काश्व के मार्गदर्शन में भाग लिया. सभी विजयी विद्यार्थियों को विभाग के अध्यक्ष प्रो. वंदना सोनी एवं समस्त शिक्षकों ने प्रशंसा व्यक्त की।

संबद्ध महाविद्यालयों के अकादमिक एवं शैक्षणिक विकास के लिए विश्वविद्यालय सदैव तत्पर

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में कुलपति सम्मेलन कक्ष में विश्वविद्यालय के संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यों/निदेशकों/प्रतिनिधियों की बैठक कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में निदेशक, महाविद्यालयीन विकास परिषद एवं संबद्ध 16 महाविद्यालयों के प्राचार्यों/निदेशकों ने भाग लिया।

सागर। बैठक के दौरान निर्देश देती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता।

बैठक में इस पर चर्चा की गई कि विगत वर्षों में विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों के लिए नवीन पाठ्यक्रमों के संचालन के लिए अनुमतियां प्राप्त नहीं हो रही हैं, जिससे महाविद्यालय विश्वविद्यालय के साथ कदम से कदम मिला कर शैक्षणिक प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो पा रहे हैं। कुलपति ने इस समस्या के समाधान के लिए विद्या परिषद् की बैठक में प्रस्ताव लाने एवं विवि की कार्यपरिषद् के समक्ष इस विषय को रखने के निर्देश दिए।

नवीन पाठ्यक्रमों की अनुमति प्रदान करें

संबद्ध महाविद्यालयों ने अपने अपने महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर एवं स्नातकोत्तर स्तर पर नवीन पाठ्यक्रम के लिए उपलब्ध संसाधनों से अवगत कराने निवेदन किया कि विवि निरीक्षण कर महाविद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों का निरीक्षण करा कर नवीन पाठ्यक्रमों के लिए आवश्यक आधारभूत संरचना एवं अन्य अनुसांगिक संसाधनों का अवलोकन कर नवीन पाठ्यक्रम के लिए अनुमति प्रदान करें, जिससे महाविद्यालय विवि के अकादमिक प्रगति के प्रति उठाए जा रहे अवसरों के अनुरूप शैक्षणिक माहौल तैयार कर सकें। महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए विवि के विभाग, पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं शोध हेतु जिन भी संसाधनों की आवश्यकता है, विवि अपने विद्यार्थियों के साथ-साथ महाविद्यालय के विद्यार्थियों को भी सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सतत् तैयार है।

उन्होंने महाविद्यालयीन विकास परिषद् को कार्य योजना बनाने के लिए निर्देशित किया गया है। उन्होंने संबद्ध महाविद्यालयों की महत्वपूर्ण समस्या , नवीन पाठ्यक्रमों की अनुमति के संबंध में कहा कि इसका समाधान विद्या परिषद् एवं कार्यपरिषद् के माध्यम से ही निकाला जा सकता है। इस दौरान महाविद्यालयों के प्राचार्यों की ओर से संयुक्त रूप से डा. विवेक रावत, डा. सुनील गुप्ता डा. धकाटे, डा. तिवारी, डा. अशीष पटेरिया एवं डा. राजू टंडन उपस्थित थे।

फैशन डिजाइनिंग, फूड, डेयरी एवं विमानन विषयों का केंद्र बनेगा विवि: कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी (बीटेक) के 06 पाठ्यक्रम डेयरी इंजीनियरिंग, एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग, फैशन एंड एपेरल इंजीनियरिंग, फूड इंजीनियरिंग एंड टेक्नॉलोजी, इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन तथा कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग संचालित हैं।

इन सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) काउंसिलिंग के माध्यम से होगी। प्रत्येक पाठ्यक्रम में 60-60 सीटें हैं। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग के पाठ्यक्रमों की लम्बे समय से मांग की जा रही थी। हमने छह स्नातक पाठ्यक्रम आरम्भ किए हैं। ये सभी पाठ्यक्रम एआईसीटीई से स्वीकृत हैं और आगे के सत्रों के लिए भी मान्यता मिल चुकी है। ये सभी पाठ्यक्रम कौशल विकास और रोजगार दोनों दृष्टिकोण से छात्र-छात्राओं के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। उन्होंने बताया कि अलग-अलग विशेषज्ञता वाले पाठ्यक्रम काफी उपयोगी हैं जैसे इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम से बिजली संयंत्र, विनिर्माण, वितरण, संचार और दूरसंचार, कंप्यूटर अनुप्रयोग, रेडियो और टेलीविजन, उपकरण निर्माण उद्योगों में रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

विवि में पीएचडी कोर्स के लिए प्रवेश परीक्षा 13 व 14 को कणाद भवन में

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की सत्र 2023-24 की पीएचडी प्रवेश परीक्षा 13 और 14 अप्रैल को होगी। यह परीक्षा विश्वविद्यालय स्थित महर्षि कणाद भवन में होगी। 13 अप्रैल को तीन शिफ्टों में सुबह 8 से 10 बजे तक, दोपहर 12 से 2 बजे तथा शाम 4 से 6 बजे होगी। 14 अप्रैल को दो शिफ्टों में सुबह 9 से 11 बजे एवं दोपहर 1 से 3 बजे तक होगी। बताया गया है कि विद्यार्थियों के प्रवेश-पत्र जारी हो चुके हैं जो विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। डाउनलोड करने के लिए आवेदकों को यूजर आईडी तथा पासवर्ड वेब पेज पर डालना होगा। आवेदकों को परीक्षा तिथि, समय एवं शिफ्ट का मिलान विवि की वेबसाइट पर उपलब्ध लिंक से करना होगा। यदि आवेदकों को प्रवेश पत्र में विषय, तिथि एवं शिफ्ट को लेकर कोई त्रुटि या विसंगति ध्यान में आती हो तो उस संबंध में एडमिशन सेल से दूरभाष नंबर- 07582-297123 पर कार्यालीन समय में संपर्क कर सकते हैं। बताया गया है कि 5 विषयों बायोटेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर साइंस, दर्शन शास्त्र एवं यौगिक विज्ञान में पीएचडी की सीटों की उपलब्धता न होने के कारण प्रवेश परीक्षा नहीं होगी।

आयोजन । शोधपरक दक्षता विकसित करने की नई पहल: प्रो. भारद्वाज

विवि में ज्ञान समृद्धि कार्यशाला का समापन

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में जनसंख्या अनुसंधान केंद्र तथा भूगोल विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित तीन दिवसीय ज्ञान समृद्धि कार्यशाला का आज समापन हुआ। कार्यशाला के समापन अवसर पर केंद्र के निदेशक प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज ने कार्यशाला में प्रतिभागी विद्यार्थियों को इसके माध्यम से प्राप्त नई जानकारियों एवं शोध प्रक्रियाओं को अपने शोध कार्य की गुणवत्ता बढ़ाने में उपयोग करने का सुझाव दिया।

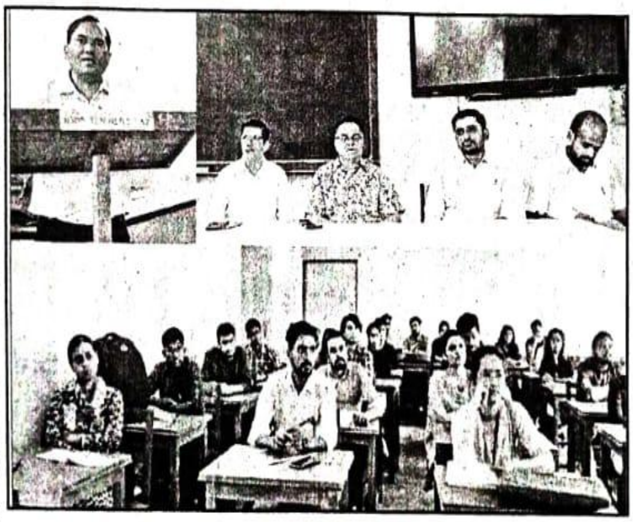

इस तीन दिवसीय कार्यशाला में कुल 52 शोधार्थियो और स्नातकोत्तर छत्र सम्मिलित हुए। कार्यशाला में कुल 12 सत्र आयोजित हुए। दिनांक 8 अप्रैल को जनसंख्या के वितरण, वृद्धि और इसके सामजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों पर प्रो. श्रीकमल शर्मा ने विस्तृत विश्लेषण के माध्यम से बताया कि किस प्रकार जनसंख्या की असंतुलित वृद्धि शिशु, युवा, वयस्कतथा वृद्ध आयु समूहों को प्रभावित कर रही है। डॉ. निखिलेश परचुरे ने जनसंख्या के सामाजिक-आर्थिक विकास में मिशन मोड प्रोजेक्ट की भूमिका और आवश्यकता के साथ उनके लाभ के बारे में जानकारी दी। इन प्रोजेक्ट के क्रियान्वयन हेतु सूचना तकनीक के उपयोग के बारे में विस्तार से बताया। विभिन्न डेटा को एकत्रित करने, उनके प्रस्तुतिकरण और नीति निर्धारण हेतु इस डेटा के उपयोग हेतु आवश्यक सूचनातंत्र की स्थिति के बारे में विभिन्न डेटा स्त्रोतों जैसे आई.एच.आई.पी., ई-अस्पताल, एच.एम.आई.एस. की जानकारी और उनकी उपादेयता के बारे में बताया।

कार्यशाला में दूसरे दिन प्रो. संतोष शुक्ला में शोध प्रक्रिया के विभिन्न आयामों पर विभिन्न उदाहरण देते हुए सरल भाषा में शोध प्रकिया में प्रारंभिक विचारों का तार्किक रूप से लेखन और उसके परिष्करण की आवश्यकता के बारे में विस्तार से बताया। शोधपत्र लेखन और उनके प्रस्तुतिकरण में होने वाली त्रुटियों को ठीक करने तथा आवश्यक सावधानियों के बारे में उन्होने छात्रों को महत्वपूर्ण सुझाव दिए। छात्रों को जनगणना, सेंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम, नेशनल सेंपल सर्वे, सिविल रजिस्ट्रेशन सिस्टम तथा नेशनल फेमेली हेल्थ सर्वे के डेटा की एकत्रीकरण की विशेषताओं और प्रक्रिया के बारे में जानकारी के साथ जनगणना के आयु संबंधी आँकड़ों की उपयोगिता के बारे में बताया गया। इन आँकड़ों के विश्लेषण और प्रबंधन तथा प्रस्तुतिकरण में उपयोग होने वाले विभिन्न डेटा एनालिसिस विधियों की भी जानकारी दी गई।

कार्यशाला के तीसरे दिन भूगोल विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. हेमंत पाटीदार ने सेंपलिंग तकनीक की शोध हेतु आवश्यकता के बारे में छात्रों को विस्तारपूर्वक बताया। प्रोबेबिलिटी सेंपलिंग और नॉन-प्रोबेबिलिटी सेंपलिंग में अंतर और उनके उपयोग के बारे में विभिन्न उदाहरणों से छात्रों को अवगत कराया। पी.आर.सी. द्वारा किये गए प्रमुख शोध प्रोजेक्ट की अवधारणा, उनके उद्देश्य तथा डेटा संग्रहण, विश्लेषण के बारे में छात्रों को अवगत कराया गया। इन शोध प्रोजेक्ट के निष्कर्षों से स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों में सुधार हेतु किये गए परिवर्तनों के बारे में भी कार्यशाला में बताया गया।

कार्यशाला के अंतिम सत्र में प्रो. भारद्वाज ने छात्रों को डेटा विश्लेषण तथा उसके परिणामों की व्याख्या के बारे में महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होनें छात्रों से तर्कसंगत शोध करने की और शोध की पुनरावृत्ति से बचने की सलाह दी। कार्यशाला के समापन सत्र में भूगोल विभाग के समस्त प्राध्यापक गण तथा पी.आर.सी. के सभी इन्वेस्टीगेटर उपस्थित रहे। इस अवसर पर कार्यशाला के समन्वयक डॉ. हेमंत पाटीदार ने प्रथम ज्ञान समृद्धि कार्यशाला के आयोजन हेतु माननीय कुलपति द्वारा दिए गए मार्गदर्शन हेतु धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इस संबंध में कुलपति द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन से कार्यशाला का सफल आयोजन संभव हो सका। उन्होंने तीन दिवसीय कार्यशाला के आयोजन की रूपरेखा बनाने और उसके क्रियान्वयन हेतु आवश्यक मार्गदर्शन के लिये प्रो. भारद्वाज को धन्यवाद दिया। कार्यशाला में विषय वक्ता के रूप में आमंत्रित प्रो. श्रीकमल शर्मा तथा प्रो. संतोष शुक्ला को भी धन्यवाद प्रेषित किया। डॉ. प्रवेंद्र कुमार तथा डॉ. आर. बी. अनुरागी ने भी इस अवसर पर छात्रों को संबोधित किया।उन्होने पी.आर.सी. के डॉ. निखिलेश परचुरे, डॉ. ज्योति तिवारी तथा डॉ. निकलेश कुमार के विशेष सहयोग हेतु धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर डॉ. सतीश सी. ने सभी उपस्थित शिक्षकों, पी.आर.सी. सदस्यों तथा विभाग के सभी सहयोगियों का इस कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु आभार व्यक्त किया तथा छात्रों से इस कार्यशाला के बारे अपने फीडबेक देने का आग्रह किया।

जो व्यक्ति समाज और देश के लिए कार्य करता है वह महान और महात्मा बन जाता है: डा. देवेंद्र

डा. आंबेडकर चेयर की ओर से विवि में महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती मनाई गई

नवदुनिया प्रतिनिधि ● सागर: डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में डा. अंबेडकर चेयर द्वारा गुरुवार को सभाकक्ष में महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभी ने महात्मा ज्योतिबा फुले के चित्र पर पुष्प अर्पित किए। साथ ही उनके विचार एवं कार्य को सभी के द्वारा बताया गया।

आंबेडकर चेयर द्वारा विवि में महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती मनाई गई। ● नवदुनिया

सेवा भावना मन को पवित्र करती हैं: डा. देवेंद्र

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डा. देवेंद्र ने कहा कि व्यक्ति का जन्म होता है और एक दिन मृत्यु होती है, लेकिन इस दौरान समाज और देश के लिए जो कार्य करता है वह महान और महात्मा बन जाता है। ईश्वर ने हमें मनुष्य का जन्म दिया है हमें मन, मस्तिक के साथ-साथ हमें एक कोमल हिर्दय भी दिया है जिसमें सभी के लिए प्रेम और आदर की भावना रहती है। मनुष्य को चाहिए कि वह संसार में किसी भी प्रकार से दुखी व रोगों से पीढ़ित लोगों की मदद के लिए अपने हाथ बढ़ाएं। हमेशा सेवा की भावना रखें क्योंकि सेवा भावना मनुष्य के मन को पवित्र कर देती है। महात्मा ज्योतिबा फुले ने अपने जीवन में शिक्षा विशेष कर महिला शिक्षा, बाल विवाह का विरोध, कृषि विकास, विद्यालयों की स्थापना आदि अनेक कार्य किया। समाज के उत्थान कार्य के लिए उन्होंने अपना जीवन लगा दिया। जिससे समाज में बदलाव भी दिखाई दिया। कार्यक्रम में बालचन्द्र, अजब सिंह, दीनदयाल, हेमराज, राम प्रसाद, रविंद्र, सुरेश आदि शोध छात्रों ने भी अपनी प्रस्तुती दी।

विभागीय संग्रहालयों की अंतर्राष्ट्रीय पहचान आधुनिकीकरण की दिशा में होगे कार्य: कुलपति

विवि में होगा संग्रहालय विज्ञान पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला तथा नेशनल हिस्ट्री म्यूजियम के साथ समझौता

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि में कुलपति सम्मेलन कक्ष में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में विभागाध्यक्ष एवं समन्वयक, संग्रहालय जिसमें विवि की प्रो. श्वेता यादव, विभागाध्यक्ष, प्राणीविज्ञान विभाग, प्रो. एच थामस, विभागाध्यक्ष, भूगर्भशास्त्र विभाग, प्रो. अजीतकुमार जैसवाल, विभागाध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग, प्रो. ममता पटेल, प्रभारी विभागाध्यक्ष, अपराधशास्त्र एवं न्यायिक विज्ञान विभाग तथा प्रो. नागेश दुबे, विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के साथ संबंधित विभागों के समन्वयक बैठक में सम्मिलित हुये। कुलपति ने बैठक में संबोधित करते हुए कहा कि विवि के पांच शैक्षणिक विभागों में संचालित संग्रहालय अपनी अंतर्राष्ट्रीय पहचान रखतें हैं तथा इन संग्रहालयों का आधुनिकीकरण कर इन्हें पूरे देश का आकर्षण बनाया जायेगा। इन विभागों के ये संग्रहालय विषय विशेषज्ञों के साथ-साथ शोधार्थियों एवं नव अध्ययन के लिए आने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा का एक जीवंत स्रोत है। इसके लिए विवि संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली एवं अन्य अनुषांगिक मंत्रालयों के सहयोग से संग्रहालयों का आधुनिकीकरण करने के लिए कटिबद्ध है। तकनीकी के दौर में विवि के इन संग्रहालयों के अभिलेखों का डिजीटाईजेशन किया जायेगा, जिससे कि संग्रहालयों से संबंधित सभी जानकारी ऑनलाईन उपलब्ध हो सके। विवि अपने संग्रहालयों से संबंधित कौशल विकास के अंतर्गत 06 माह का प्रमाण पत्र के साथ-साथ एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम तैयार करेगा, जिससे इस प्रकार के डिप्लोमा को पूर्ण करने के उपरांत यहां के विद्यार्थियों के लिए देश के विभिन्न संग्रहालयों में निकलने वाली भर्तियों में रोजगार प्राप्त करने के अवसर प्राप्त हो सकें। संग्रहालयों के बारे में पर्याप्त जानकारी एवं प्रचार-प्रसार के साथ-साथ विवि के स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों, संबद्ध महाविद्यालयों के विद्यार्थियों तथा अन्य विवि के विद्यार्थियों हेतु दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 27 एवं 28 जून 2024 को विवि में किया जायेगा। इस राष्ट्रीय कार्यशाला में देश के ख्यातनाम विषय विशेषज्ञों के साथ विवि के रिसोर्स पर्सन प्रायोगात्मक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे, जिससे कि सभी प्रतिभागी लाभान्वित होंगे। इसी कार्यशाला में नेशनल हिस्ट्री म्यूजियम के साथ विवि एक समझौता अनुबंध करेगा, जो कि विश्वविद्यालय में अकादमिक एवं शैक्षणिक प्रगति के लिए लाभकारी रहेगा।

डॉ. अंबेडकर के विचार और दर्शन के बिना विकसित भारत की परिकल्पना साकार नहीं होगीः कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में डॉ. अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में हुए कार्यक्रम में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा डॉ. अंबेडकर एक ऐसी किताब हैं जिनके पन्ने कभी खत्म नहीं होते। उनके व्यक्तित्व के अनगिनत पहलू हैं। किसी भी पहलू पर बात करें तो समय कम पड़ जाए। वे एक महामानव थे।

एक अपराजेय नायक थे। स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व के पैरोकार डॉ अंबेडकर संवैधानिक लोकतंत्र की स्थापना के शिल्पकार थे। शिक्षा, समाज, स्त्री, अर्थशास्त्र, पत्रकारिता, राजनीति और नागरिक समाज से जुड़े प्रत्येक मुद्दे पर उनकी अपनी एक अलग दृष्टि थी। वही दृष्टि आज के विकसित भारत की परिकल्पना में महती भूमिका निभा रही है। डॉ. अंबेडकर के विचार और दर्शन के बिना विकसित भारत की परिकल्पना नहीं साकार होगी। वे समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के कल्याण और सशक्तिकरण की बात करते थे। यही आत्मनिर्भर भारत, विकसित भारत और विश्वगुरु भारत की परिकल्पना का मूल लक्ष्य है। उन्होंने विवि के डॉ. अंबेडकर चेयर के तहत किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में डॉ. अम्बेडकर चेयर के अतिरिक्त समाज के कमजोर तबकों के विद्यार्थियों के लिए निशुल्क कोचिंग भी संचालित है। इसके अलावा जल्दी ही विश्वविद्यालय में डॉ. अम्बेडकर को समर्पित एक विशाल अध्ययन केंद्र भवन के रूप में आकर लेगा जो प्रस्ताव की स्वीकृति के बाद निर्मित होना आरंभ हो जाएगा। मुख्य वक्ता इंडियन इकोनॉमिक एसोसिएशन के सचिव प्रो रवींद्र ब्राम्हे ने कहा डॉ. अंबेडकर कहते थे कि कृषि के विकास के लिए औद्योगिकीकरण आवश्यक है। वे चाहते थे कि आर्थिक और सामाजिक विकास सबका होना चाहिए। शिक्षा राजनीति, आर्थिक, सामाजिक विकास के माध्यम से सबका कल्याण होना चाहिए। भारत की जनसंख्या अधिक है इसलिए इस जनसंख्या को श्रम शक्ति के रूप में देखना चाहिए और इसका सही उपयोग करना चाहिए। 2047 में हम विश्व की सबसे बड़ी श्रम शक्ति होंगे वही हमारे आर्थिक विकास पर विकसित भारत का मार्ग बनाएगी। महिलाओं के आर्थिक रूप से सबलता के लिए कृषि क्षेत्र का भी औद्योगिकीकरण अति आवश्यक है।

सागर। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की मौजूदगी में विवि में डॉ. अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम हुआ।

समारोह डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में डा. आंबेडकर जयंती के पर आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा

'डा. आंबेडकर एक ऐसी किताब हैं, जिनके पन्ने कभी खत्म नहीं होते'

नवदुनिया प्रतिनिधि ● सागरः डा हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में डा. आंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डा. आंबेडकर एक ऐसी किताब हैं, जिनके पन्ने कभी खत्म नहीं होते। उनके व्यकितत्व के अनगिनत पहलू हैं। किसी भी पहलू पर बात करें तो समय कम पड़ जाए। वह एक महामानव थे। एक अपराजेय नायक थे। स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व के पैरोकार डा. आंबेडकर संवैधानिक लोकतंत्र की स्थापना के शिल्पकार थे। उनका शिक्षा, समाज, स्त्री मुद्दों, अर्थशास्त्र, पत्रकारिता, राजनीति और नागरिक समाज से जुड़े प्रत्येक मुद्दों पर अपनी एक अलग दृष्टि थी। वही दृष्टि आज के विकसित भारत की परिकल्पना में महती भूमिका निभा रही है। डा. आंबेडकर के विचार और दर्शन के बिना विकसित भारत की परिकल्पना नहीं साकार होगी। वह समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के कल्याण और सशक्तिकरण की बात करते थे। यही आत्मनिर्भर भारत, विकसित भारत और विश्वगुरु भारत की परिकल्पना का मूल लक्ष्य है। उन्होंने विवि के डा. आंबेडकर चेयर के तहत किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि डा. विश्वविद्यालय में डा. आंबेडकर चेयर के अतिरिक्त समाज के कमजोर तबकों के विद्यार्थियों के लिए निशुल्क कोचिंग भी संचालित है। इसके अलावा शीघ्र ही विश्वविद्यालय में डा. आंबेडकर को समर्पित एक विशाल अध्ययन केंद्र भवन के रूप में आकर लेगा, जो प्रस्ताव की स्वीकृति के उपरांत निर्मित होना आरंभ हो जाएगा।

विवि में डा. आंबेडकर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षक। ● नवदुनिया

जनसंख्या को श्रमशक्ति के रूप में देखना

मुख्य वक्ता के तौर पर आमंत्रित अतिथि इंडियन इकोनामिक एसोसिएशन के सचिव प्रो. रवींद्र ब्राम्हे ने कहा कि डा. आंबेडकर कहते थे कि कृषि के विकास के लिए औद्योगिकरण आवश्यक है। वह चाहते थे कि आर्थिक और सामाजिक विकास सबका होना चाहिए। शिक्षा, राजनीति, आर्थिक, सामाजिक विकास के माध्यम से सबका कल्याण होना चाहिए। भारत की जनसंख्या अधिक है, इसलिए इस जनसंख्या को श्रम शक्ति के रूप में देखना चाहिए और इसका सही उपयोग करना चाहिए। 2047 में हम विश्व की सबसे बड़ी श्रम शक्ति होंगे। वहीं हमारे आर्थिक विकास पर विकसित भारत का मार्ग बनाएगी। महिलाओं के आर्थिक रूप से सबलता के लिए कृषि क्षेत्र का भी औद्योगिकरण अति आवश्यक है।

शिक्षा बदलाव का सबसे बड़ा हथियार

कार्यक्रम में प्रो चंदा बैन ने कहा कि बाबा साहब एक जुनूनी शख्सियत थे। शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्होंने काफी संघर्ष किया। उनका जीवन संघर्ष आज के युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत है। उन्होंने समाज के वंचित तबकों के लिए आवाज उठाई। वह शिक्षा को बदलाव का सबसे बड़ा हथियार मानते थे। वह सामाजिक बदलाव के प्रवर्तक थे, आधुनिक विचार और प्रगतिशील विचारों के प्रस्तोता थे। प्रो. अजीत जायसवाल ने भी डा. आंबेडकर के दर्शन, विचार एवं कार्यों का स्मरण करते हुए उनको श्रद्धाजलि दी।

15 शोध पत्र प्रस्तुए हुए

कार्यक्रम का संचालन डा. देवेंद्र ने किया। कार्यक्रम में डा. संजय शर्मा, डा. हिमांशु, डा. विवेक जायसवाल, डा. रविदास , डा. बेंद्रे, अजब सिंह एवं बड़ी संख्या में एनएसएस के स्वयंसेवक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में अध्यक्षता डा. बेंद्रे एवं डा. आशुतोष मिश्रा ने की। इस सत्र में 15 शोध पत्रों का वाचन किया गया और कई शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने बाबा साहब पर केंद्रित अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन डा. रमाकांत ने किया।

परीक्षा

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने केंद्रों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं के संबंध में अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए

पीएचडी प्रवेश परीक्षा में 13 सौ से ज्यादा विद्यार्थी हुए शामिल

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में सत्र 2023-24 की पीएचडी प्रवेश परीक्षा विवि के महर्षि कणाद भवन में आयोजित हुई। पांच पालियों में आयोजित प्रवेश परीक्षा के दौरान देश के कई स्थानों के 13 सौ से ज्यादा विद्यार्थी शामिल हुए, जिनमें काफी उत्साह नजर आया। प्रवेश परीक्षा के दौरान कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने केंद्रों का निरीक्षण किया और व्यवस्थाओं के संबंध में अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

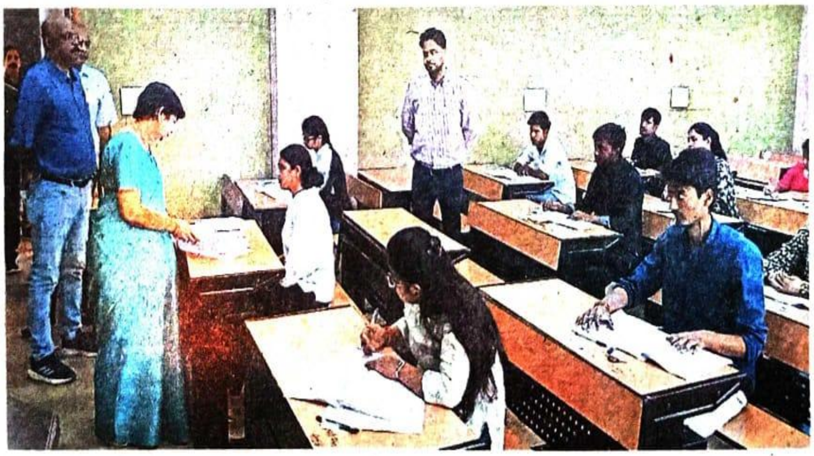

परीक्षा केंद्र का निरीक्षण करती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। • नवदुनिया

दो दिवसीय प्रवेश परीक्षा 13 व 14 अप्रैल 2024 को विश्वविद्यालय के महर्षि कणाद भवन में आयोजित की गई, जिसके लिए चार दिन पहले से ही व्यवस्थाएं की जा रही थी। पीएचडी के 36 विषयों के लिए देश के कई स्थानों से विद्यार्थी सागर पहुंचे थे। कई विद्यार्थी एक दिन पहले ही यहां पहुंचने लगे थे जो सुबह से परीक्षा केंद्रों में पहुंचे। परीक्षा के बाद विवि प्रशासन द्वारा शीघ्र ही रिजल्ट घोषित किए जाएंगे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने परीक्षा केंद्र पहुंचकर व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और सुविधाओं का जायजा लिया।

36 विषयों में पीएचडी प्रवेश परीक्षा हेतु आवेदन किया था : विवि में आयोजित पीएचडी प्रवेश प्रक्रिया के संबंध में प्रवेश प्रकोष्ठ के चेयरमैन प्रो. दिवाकर शुक्ला ने बताया कि 36 विषयों में 13 सौ से अधिक छात्रों ने पीएचडी प्रवेश परीक्षा हेतु आवेदन किया था। यह परीक्षा सागर केंद्र पर आयोजित की गई। निरीक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के प्रभारी परीक्षा नियंत्रक डा. एसपी गादेवार, प्रो. दिवाकर शुक्ला, परीक्षा समन्वयक प्रो. रत्नेश दास सहित अन्य अधिकारी एवं शिक्षक मौजूद रहे।

विश्वविद्यालय में हुआ कार्यक्रम

सागर. डॉ हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय में रविवार को डॉ. भीमराव आंबेडकर की जयंती मनाई गई। आंबेडकर चेयर के द्वारा विभाग में आयोजित इस कार्यक्रम में कुल सचिव डॉ. एसपी उपाध्याय, डॉ. कलीनाथ झा, डॉ. आरती बेंद्रे, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. देवेंद्र आदि के द्वारा डॉ. भीमराव आंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित किए।

विश्वविद्यालय • चार वर्षीय होगा पाठ्यक्रम, एनसीईटी के आधार पर होगा दाखिला

इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम में आवेदन शुरू, 30 अप्रैल तक 12वीं पास विद्यार्थी कर सकेंगे आवेदन

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में चार वर्षीय इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (आईटीईपी) में प्रवेश की प्रक्रिया शुरू हो गई है। विश्वविद्यालय में इस पाठ्यक्रम में प्रवेश राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा नेशनल कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (एनसीईटी) के आधार पर होगा। इसके लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया टीचर एजुकेशन एक पॉपुलर पाठ्यक्रम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 को देखते हुए टीचर एजुकेशन पाठ्यक्रमों में कई बदलाव किए गए हैं। शिक्षकीय पेशा एक सम्मानजनक पेशा माना जाता है और अधिकांश लोगों की रुचि और लक्ष्य शिक्षक बनना होता है। रोजगार की दृष्टि से युवाओं के लिए चार वर्षीय आईटीईपी पाठ्यक्रम एक अच्छा विकल्प है। विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में उपलब्ध इस पाठ्यक्रम के लिए होने जा रही राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षा के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू हो गई है। इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम चार साल का डुअल डिग्री प्रोग्राम है। इसमें बीए-बीएड, बीएससी-बीएड, बीकॉम-बीएड जैसे कोर्स संचालित होंगे। आईटीईपी कोर्स के लिए योग्यता कम से कम 12वीं पास होना चाहिए। इस कोर्स के जरिए विद्यार्थी चार वर्ष में ही स्नातक डिग्री और टीचर एजुकेशन डिग्री दोनों प्राप्त कर सकते हैं। इससे पहले 12वीं के बाद ग्रेजुएशन और बीएड करने पर कुल पांच साल लगते थे। यह कोर्स कुल आठ सेमेस्टर का है। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने बताया कि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त चार वर्षीय इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम के तहत शैक्षणिक सत्र 2024-25 में बीए-बीएड, बीएससी-बीएड, बीकॉम-बीएड प्रत्येक में 50 सीटों सहित कुल 150 सीटें उपलब्ध हैं।

प्रवेश प्रकोष्ठ के समन्वयक प्रो. दिवाकर शुक्ला ने बताया कि एनटीए के माध्यम से एनसीईटी-2024 की परीक्षा के लिए ऑनलाइन आवेदन करने अंतिम तारीख 30 अप्रैल है। इच्छुक अभ्यर्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट देख सकते हैं। या फिर एनटीए की वेबसाइट ncet.samarth.ac.in से भी जानकारी प्राप्त कर आवेदन कर सकते हैं।

विवि पीएचडी प्रवेश-परीक्षा की आंसर-की जारी, दावे-आपत्ति कल तक ली जाएंगी

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में 13 और 14 अप्रैल हुई पीएचडी प्रवेश-परीक्षा 2023-24 की सभी समस्त विषयों की आंसर-की जारी कर दी गई हैं। इन्हें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने इस संबंध में सूचना जारी कर कहा है कि परीक्षार्थी अपनी शिकायतें ई-मेल admission@dhsgsu.edu.in पर दिनांक 18 अप्रैल तक भेज सकते हैं। गौरतलब है कि 36 विषयों की 202 सीटों के लिए पीएचडी प्रवेश परीक्षा हुई थी। जिनमें करीब 1300 विद्यार्थी शामिल हुए थे। परीक्षा के बाद अब आंसर की जारी की गई है। जिसमें दिए गए प्रश्नों के उत्तर और उनके विकल्पों को लेकर यदि विद्यार्थियों को कोई आपत्ति या शिकायत है तो वे दो दिन के भीतर अपनी आपत्ति दर्ज करा सकते हैं। इसके बाद उनका निराकरण कर फायनल रिजल्ट जारी कर दिया जाएगा।

भू विज्ञान की विभिन्न पदों पर नियुक्तियों में सागर विश्वविद्यालय के छात्रों का दबदबा कायम

78 वर्ष बाद भी देश-दुनिया में अलग पहचान बनाए हुए है

विवि से निकले छात्र शीर्ष वैज्ञानिक बन चुके हैं

(राहुल सिलाकारी)

सागर, 16 अप्रैल. आजादी के पहले ही डॉक्टर हरीसिंह गौर द्वारा पिछड़े हुए बुंदेलखंड क्षेत्र में तत्कालीन अविभाजित मध्यप्रदेश का पहला विश्वविद्यालय सागर में स्थापित किया था, जिसमें उन्होने पहले वर्ष से ही भू विज्ञान विभाग को भी शुरु किया था.

78 वर्ष बाद भी सागर विवि का यह विभाग देश तो ठीक पूरी दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं. यहां से निकले हुए छात्र देश के शीर्षस्थ भू वैज्ञानिक रहे तो कुछ अन्य विवि में कुलपति जैसे महत्वपूर्ण पदों पर भी चयनित हुए.

उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश के पहले विवि सागर के डॉ गौर यूनिवसिटी जो 1946 में शुरु हुई. उसमें पहले वर्ष से ही भू विज्ञान का कोर्स डॉ गौर द्वारा शुरु कराया गया था. पिछले 78 वर्षों के दौरान विवि का यह विभाग सर्वाधिक प्रचलित और प्रसारित रहा है. आलम यह कि यहां से निकले हुए छात्रों का चयन राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर की भू वैज्ञानिक संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों पर रहा है. **प्रो. वेस्ट ने जीवन भर दी सेवाएं** - डॉ गौर द्वारा विवि की स्थापना के साथ शुरु किए गए ऐप्लाइड जियोलॉजी विभाग की स्थापना करने के साथ अंतरराष्टीय स्तर के तत्कालीन सर्वेश्रेष्ठ भू वैज्ञानिक प्रो. डब्लयूडी वेस्ट को इसका प्रभार संभालने सागर बुलाया था.

आलम यह कि 1948 से लेकर अपनी मृत्यु तक करीब 50 वर्ष तक प्रो. वेस्ट ने विभाग में अपनी सेवाएं देते हुए यहां से सर्वश्रेष्ठ छात्रों को निकाला जो देश और दुनिया में सागर विवि की छवि बनाए रहे.

यहां बता दें कि विवि में अपनी सेवाएं देने के दौरान प्रो. वेस्ट वेतन के तौर पर महज एक रुपए ही लेते थे. आज भी प्रो. वेस्ट की समाधि विभाग के परिसर में ही बनी हुई है.

लगातार चयनित हो रहे विश्वविद्यालय के विभाग से छात्र

78 वर्ष बाद भी सागर विवि के ऐप्लाइड जियोलॉजी विभाग की गुणवत्ता और श्रेष्ठता बनी हुई है. यहां के छात्रों का चयन देश के विभिन्न भू विज्ञान के पदों पर हो रहा है. पिछले छह माह में कनिष्ठ खनन भू विज्ञानी, सहायक खनन भू विज्ञानी पदों जिनके लिए यूपीएससी द्वारा चयन परीक्षा ली गई थी ने कई छात्रों का चयन हुआ. इनमें प्रमुख रुप से कनिष्ठ खनन भू विज्ञानी पद पर अब्दुल समद, आवेज आलम, गरिमा सिंह, अखिलेश अग्रवाल, अभिषेक तिवारी, जूनियर माइनिंग जियोलॉस्जिट के रुप में चयनित हुए. संघ लोकसेवा आयोग के तहत सहायक खनन भू विज्ञानी की परीक्षा में भी 26 प्रतिशत छात्र सागर विवि के रहे हैं. इसके अलावा यूपीएससी की संयुक्त भू वैज्ञानिक परीक्षा में भी विभाग के 8 छात्र अमित कुमार, अशीष राय, रामा अहिरवार, पूर्वा पांडेय, मधुस्मिता सेठी, कोकिल राय, महेंद्र चौहान और संगम सामल चुने गए हैं.

ऐप्लाइड जियोलॉजी विभाग प्रारंभ से समृद्ध रहा. यहां से निकले छात्रों ने न केवल सागर बल्कि विवि और डॉ गौर का नाम भी रोशन किया. विभाग को संवारने और इसकी दशा-दिशा निर्धारित करने में प्रो. वेस्ट की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही. अपने जीवन की अंतिम सांस तक विद्यार्थियों को मार्गदर्शन और शिक्षा दी.

प्रो. आरके त्रिवेदी
पूर्व विभाग अध्यक्ष

विवि का भू गर्भ शास्त्र विभाग प्रारंभ से ही वर्चित रहा है. यहां से निकले हुए विद्यार्थी देश और दुनिया के महत्वपूर्ण संस्थानों के शीर्ष पदों तक पहुंचे हैं. वर्तमान में भी विभाग के विद्यार्थी लगातार सफलता के नए कीर्तिमान रच रहे हैं और डॉक्टर हरीसिंह गौर एवं उनके द्वारा स्थापित विवि का नाम रोशन कर रहे हैं.

प्रो. नीलिमा गुप्ता
कुलपति डॉ हरीसिंह गौर केंद्रीय विवि सागर

शोध और नवाचार ईकोसिस्टम बेहतर बनाने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे : कुलपति

हैदराबाद में 14 से 17 अप्रैल तक आयोजित हुई संगोष्ठी

हैदराबाद में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित वक्ता। ● नवदुनिया

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर: भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली की 98वीं वार्षिक बैठक और कुलपतियों की राष्ट्रीय संगोष्ठी उच्च शिक्षा विषय पर आईसीएफएआई फाउंडेशन फार हायर एजुकेशन, हैदराबाद (डीम्ड विश्वविद्यालय) में 14 से 17 अप्रैल तक आयोजित की गई। समारोह में तेलंगाना के राज्यपाल ने उद्घाटन वक्तव्य दिया।

डा हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर नर्चरिंग रिसर्च एंड इनोवेशन ईकोसिस्टमज विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि भारत में शोध और नवाचार ईकोसिस्टम बेहतर बनाने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे। इस विशेष सत्र के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि समाजों और अर्थव्यवस्थाओं की उन्नति और मानव ज्ञान की प्रगति के लिए अनुसंधान और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देता है और विभिन्न जटिल चुनौतियों का समाधान करता है।

नवाचारी शोध नीति, फंडिंग, सहयोगात्मक शोध नेटवर्क, अंतरानुशासनिक शोध को बढ़ावा देना आज के समय की आवश्यकता है, इसलिए इस पर विचार-विमर्श प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2023 की तुलना में वर्ष 2024 में भारत में क्यूएस विश्व रैंकिंग में सुधार हुआ है। आईआईटी बाम्बे, रैंकिंग 116 से 95, आईआईटी दिल्ली 67 से 63, और आईआईएम अहमदाबाद 53 से 22वें स्थान पर पहुंच गया है, जो हमारे अनुसंधान क्षमता में सुधार के कारण संभव हुआ है।

शिक्षकों की गुणवत्ता और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस में अनुसंधान के परिणामस्वरूप केरल में एआई शिक्षकों को लांच किया गया है, जो 3 भाषाओं में पढ़ा सकते हैं। केआईईटी ग्रुप आफ इंस्टीट्यूट्स द्वारा आर्टिफिशियल नेटवर्क यूनिट फार स्मार्ट ह्यूमन नालेज असिस्टेंस लांच की गई है, जो 21 भाषाओं को समझती है। दिल की धड़कन तक भी जानती है। यह होम आटोमेशन और सेल्फ कलिंग के सिद्धांतों पर आधारित है। उन्होंने यह भी प्रस्ताव रखा कि रिसर्च इन्फ्रास्ट्रक्चर में निवेश करने, शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों को मजबूत करने, एकेडमिक और इंडस्ट्री के बीच सहयोग को बढ़ावा देने, स्टार्ट अप और उद्यमियों को सहयोग करने, नवाचारी संस्कृति को बढ़ावा देने और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने से शोध और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को पोषित और मजबूत किया जा सकता है। सत्र के दौरान उन्होंने कई विश्वविद्यालयों के कुलपतियों द्वारा व्यक्त चिंताओं और प्रश्नों का समाधान किया। पूरा सत्र जीवंत रहा और इस दौरान कई उपयोगी विचार बिंदुओ पर चर्चा की गई।

इस सत्र में हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीजे राव, जैन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राज सिंह, भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार राहुल कुलश्रेष्ठ ने भी अपना उद्बोधन दिया। सत्र में एल्सिवियर समूह की डा. शिप्रा दत्ता ने रिसर्च इंटेलीजेंस पर प्रस्तुति दी।

जागरूकता

विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व संग्रहालय में विश्व विरासत दिवस मनाया गया, प्रो नागेश दुबे ने कहा-

'विश्व विरासत सूची में शामिल होने की योग्यता रखता है एरण'

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागरः विश्व विरासत दिवस के अवसर पर गुरुवार को प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के संग्रहालय में विश्व विरासत दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने विश्व विरासत दिवस की महत्ता को बताया साथ ही कहा कि संग्रहालय में संरक्षित एरण से प्राप्त गुप्तकालीन नृवराह, नृसिंह, गजलक्ष्मी एवं हनुमान की महत्वपूर्ण प्रतिमाओं के साथ-साथ अनेक महत्वपूर्ण पुरानिधियां विद्यमान हैं, जो एरण की सांस्कृतिक विरासत को प्रस्तुत करती हैं।

प्रो. दुबे ने कहा कि सागर जिले में स्थित ऐतिहासिक दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण स्थल एरण को विश्व विरासतों की सूची में सम्मिलित किया जाये। ऐतिहासिक स्थल एरण विश्व विरासत सूची में शामिल होने की योग्यता रखता है। एरण में नवपाषाण काल से लेकर पूर्व मध्यकाल तक के पुरातात्त्विक साक्ष्य उपलब्ध हैं। गुप्तकाल में एरण का महत्व सबसे अधिक रहा है। वर्तमान में एरण पुरास्थल पर गुप्तकाल में निर्मित विष्णु मंदिर, महावराह की प्रचंड प्रतिमा, महाविष्णु मंदिर के गर्भगृह में प्रतिष्ठित महाविष्णु की विशाल प्रतिमा, नृसिंह प्रतिमा, कृष्णलीला से संबंधित शिलाफलक, 47 फुट ऊंचा गरूड़ ध्वज स्तम्भ, भारत में सबसे प्राचीन अभिलिखित सती स्तम्भ (शिवलिंग) दृष्टव्य हैं। एरण को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाना अत्यावश्यक है।

विवि के प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग में पुरातत्व का महत्व बताते प्रो. नागेश दुबे। • नवदुनिया

गौरवपूर्ण विरासतों को सहेज कर रख सकें

प्रो. दुबे ने अपने व्यक्तव्य में कहा कि हमें हमारे बुंदेलखंड की प्राचीन धरोहरों के प्रति जनसामान्य में जागरुकता फैलाने की आवश्यकता है, जिससे हम बुंदेलखंड की गौरवपूर्ण विरासतों को सहेज कर रख सकें, जिनसे भावी पीढ़ियां भी लाभांवित हो सकें। इतिहास एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में कार्य कर रहे शोधार्थियों के द्वारा सामान्य जन में जागरुकता को फैलाने के लिए विशेष कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना अत्यावश्यक है। इस अवसर पर विभागीय शिक्षकगण डा. सुरेंद्र कुमार यादव, अतिथि शिक्षक डा. मशकूर अहमद कादरी, डा. शिवकुमार पारोचे, शोध विद्यार्थी कु यामिनी योगी, संजय आठिया, भरत यादव एवं सोहनलाल मोदनवाल के साथ-साथ विभागीय छात्र-छात्राएं रमन, शंकर सिंह, आदर्श यादव, बसंत चढ़ार, हेमंत पवार, निहारिका ठाकुर, मल्लिका मंडल, प्रतिष्ठा लोधी, अदिति जाट, पूर्वा साहू तथा कर्मचारी मो. आदिल खान, हाशिम खान, मोहन राय एवं राजेंद्र रजक आदि उपस्थित रहे।

रूस-यूक्रेन युद्ध को मानवता पर संकट बताया

नवभारत न्यूज

सागर 19 अप्रैल. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग में रूस-यूक्रेन युद्ध, वैश्विक व्यवस्था में भारत की स्थिति की रूपरेखा विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया. इस विशेष व्याख्यान की मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो. माधुरी सुखिजा ने विषय पर प्रकाश डालते हुए इसे मानवता पर संकट बताया.

वैश्विक व्यवस्था में भारत की स्थिति पर व्याख्यान

प्रो. सुखिजा ने रूस-यूकेन युद्ध के संदर्भ में भारत के पक्ष की सराहना करते हुए इस बात पर भी प्रकाश डाला कि बदलते अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भारत की भूमिका किस प्रकार की हो. मुख्य वक्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में रूस-युक्रेन युद्ध से विभिन्न देशों के समक्ष विभिन्न चुनौतियां उभरकर सामने आ रही है जिनका समाधान सभी देशों एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा मिलकर किया जाना चाहिए. इस कार्यक्रम की आयोजक विभागाध्यक्ष प्रो. अनुपम शर्मा रहीं. कार्यक्रम के अंत में ज्ञापन डॉ. आफरीन खान द्वारा किया गया. इस कार्यक्रम में प्रो. अनुपमा कौशिक, डॉ. नेहा निरंजन, डॉ. जनार्दन, डॉ. दीपक मोदी एवं डॉ. रणवीर सिंह व विभाग के शोधार्थी समीर पांडे, विवेक प्रसाद, विनायक मिश्रा, दामिनी सिंह, निधि सिंह, प्रियंका यादव, विशाल तिवारी एवं हिमांशु त्रिपाठी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहभागिता दर्ज की एवं विभाग के विद्यार्थी भी इस विशेष व्याख्यान में उपस्थित रहे.

करुणा चौरसिया को रसायन शास्त्र में शोध उपाधि मिली

जागरण, सागर। डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के रसायन शास्त्र विभाग की शोध छात्रा करुणा चौरसिया पिता मुकेश कुमार चौरसिया माता श्रीमती अनीता चौरसिया को शोध उपाधि प्राप्त हुई है। उनका शोध कार्य सिंथेसिस फिजिको केमिकल कैरेक्टराइजेशन एंड बायोलॉजिकल स्टडीज ऑफसम न्यू थायोसेमीकरबाजाइड डेराईबड लिगैंडस एंड देयर थ्रीडी ट्रांजीशन मेटल कॉम्प्लेक्स विषय पर किया। करुणा ने अपना शोध कार्य डॉ.ऋतु यादव के पर्यवेक्षण में संपन्न किया। उनकी इस सफलता पर विभाग अध्यक्ष प्रो.एपी.मिश्रा एवं विभाग के सभी शिक्षक गणों के साथ ही विद्यार्थियों द्वारा बधाई प्रेषित की।

आयोजन

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस का आयोजन

पुस्तकें सभ्यता की सबसे प्रमाणिक प्रतिबिंब हैं: कुलपति

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में केंद्रीय पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक परिषद् के तत्त्वावधान में विश्व पुस्तक दिवस एवं कॉपीराइट दिवस 23 अप्रैल मनाया गया जिसमें विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में उपस्थित हुए. इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पुस्तकें हमारी आजीवन मित्र होती हैं. जो आनंद पुस्तक पढ़ने में है वह इंटरनेट पर मौजूद सामग्री के पढ़ने में नहीं है. आज के समय में भी जब इंटरनेट पर अथाह सामग्री मौजूद है, बावजूद इसके हम अखबार जरूर मंगाते हैं और पढ़ते हैं. पुस्तक को किसी भी अन्य सामग्री से स्थानांतरित नहीं किया जा सकता क्योंकि पुस्तकें सभ्यता की सबसे प्रमाणिक प्रतिबिंब हैं. साहित्य की महान शख्सियत विलियम शेक्सपीयर की पुण्यतिथि पर यह दिवस यूनेस्को द्वारा घोषित किया गया था। उन्होंने कहा कि पुस्तक का हर पन्ना नई सूचना, नई ऊर्जा एवं नए ज्ञान का वाहक है. एक

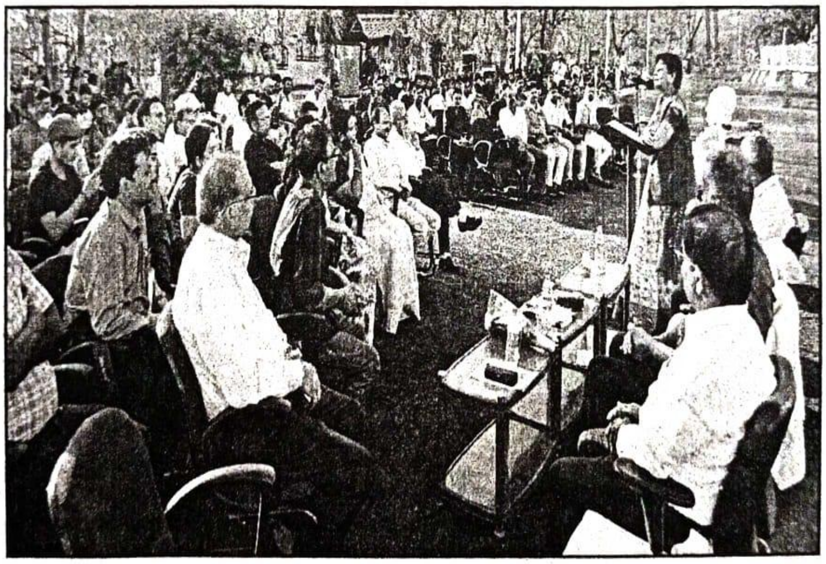

विद्यार्थी और किताब का अटूट संबंध होता है। यह आयोजन विद्यार्थियों को किताबों के और अधिक करीब लाएगा उन्होंने विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय में 'बुक क्लब' बनाने के लिए निर्देश देते हुए कहा कि इस माध्यम से कोई भी पाठ्य सामग्री दान कर सकता है. उन्होंने अपने पिता स्व. एम.सी वार्ष्णेय के निजी पुस्तकालय में उपलब्ध 281 पुस्तकें विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय को समर्पित कीं. स्व. श्री वार्ष्णेय इंजीनियरिंग के अध्येता और अगाध साहित्य प्रेमी के साथ-साथ अद्वितीय रचनाकार भी थे. उनके द्वारा लिखित पुस्तक 'एक अनाम औरत के नाम खत-अनुरक्ता' इस बात का उदाहरण है. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अपने पिता द्वारा संकलित पुस्तकों को विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध कराकर ज्ञान की विरासत की समृद्धि के प्रति अपना संकल्प व्यक्त किया. साथ ही उन्होंने जंतु विज्ञान के क्षेत्र में स्वयं के अध्ययन एवं शोध से अर्जित महत्त्वपूर्ण ज्ञान सामग्री, शोध-पत्र, समीक्षा-पत्र एवं अन्य प्रकाशनों को भी प्राणी शास्त्र विभाग को समर्पित किया। इस अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि पुस्तक पढ़ना और बेहतर ढंग से जीना एक दूसरे के अभिन्न अंग हैं. जो जितना बेहतर पढ़ेगा उसका जीवन उतना ही समृद्ध होता जाएगा। इस दुनिया पर प्राधिकार के लिए इस दुनिया को जानना जरूरी है. जानने का यह रास्ता पुस्तकों से ही होकर जाता है। कार्यक्रम में पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मोहन टी. ए. ने स्वागत वक्तव्य दिया. कार्यक्रम का संयोजन डॉ राकेश सोनी ने एवं संचालन डॉ. आशुतोष ने किया. कार्यक्रम में प्रो. चन्दा बेन, प्रो. कालीनाथ झा, प्रो. जीएल पुणताम्बेकर, प्रो. बी. के श्रीवास्तव, प्रो. अनिल जैन, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस. पी उपाध्याय, डॉ. अनिल तिवारी, डॉं अनुराग, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. हिमाशु सहित बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय में विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस का आयोजन

जागरण, सागर। डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक परिषद् के तत्वावधान में विश्व पुस्तक दिवस एवं कॉपीराईट दिवस मंगलवार को मनाया गया। इसमें विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। इस अवसर पर कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पुस्तकें हमारी आजीवन मित्र होती हैं। जो आनंद पुस्तक पढ़ने में है वह इंटरनेट पर मौजूद सामग्री के पढ़ने में नहीं है। पुस्तकें सभ्यता की सबसे प्रामाणिक प्रतिबिंब हैं। उन्होंने बताया कि साहित्य की महान शख्सियत विलियम शेक्सपीयर की पुण्यतिथि पर यह दिवस यूनेस्को द्वारा घोषित किया गया था। उन्होंने अपने पिता स्व.एमसी वार्ष्णेय के निजी पुस्तकालय में उपलब्ध 281 पुस्तकें विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय को समर्पित कीं। इस अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो.अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि पुस्तक पढ़ना और बेहतर ढंग से जीना एक दूसरे के अभिन्न अंग हैं। जो जितना बेहतर पढ़ेगा उसका जीवन उतना ही समृद्ध होता जाएगा। कार्यक्रम में पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ.मोहन टीए ने स्वागत वक्तव्य दिया।

वैदिक अध्ययन से अब विवि में शोध कर सकेंगे विद्यार्थी, ऑनर्स के साथ सर्टिफिकेट-डिप्लोमा कोर्स भी

सागर| डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान परंपरा को संरक्षित रखने के उद्देश्य से वैदिक अध्ययन विभाग की स्थापना की गई है। 12वीं की पढ़ाई के बाद विद्यार्थी इसमें डिप्लोमा, सर्टिफिकेट, डिग्री प्राप्त कर सकते हैं। इसमें शोध के पाठ्यक्रम भी इसी वर्ष से शुरू किए जा रहे हैं।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि वैदिक अध्ययन से पढ़ाई करने वाले विद्यार्थी एक तरफ जहां भारत की प्राचीन संस्कृति, ज्ञान की वास्तविकता और अखंडता को समझेंगे, वहीं दूसरी तरफ इस कोर्स को करने के बाद वह शिक्षक और प्रोफेसर भी आसानी से बन सकेंगे। वे एसएससी, पीएससी, एमपी पीएससी सहित अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में भी भाग ले सकेंगे। वैदिक अध्ययन विभाग भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन के लिए समर्पित विभाग है। इसमें बीए ऑनर्स वैदिक स्टडीज, डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कोर्स और पीएचडी प्रोग्राम शामिल हैं। बीए ऑनर्स में सीटों की संख्या 40 है। वैदिक अध्ययन नाम से यह देश का पहला विभाग है। दिल्ली यूनिवर्सिटी और बीएचयू में भी इस तरह के कोर्स शुरू हुए हैं लेकिन उनकी प्रकृति भिन्न है। यहां डिप्लोमा और सर्टिफिकेट सीधी भर्ती से कर सकते हैं, वहीं डिग्री और पीएचडी के लिए एंट्रेंस एग्जाम पास करना होगा। कुलपति प्रो. गुप्ता ने बताया कि भारतीय प्राचीन ज्ञान के कोष वेद भारत की विशाल ज्ञान राशि के परिचायक हैं। भारतीय गणित, भारतीय विज्ञान, आयुर्वेद, श्रीमदभगवद्गीता में आत्म-प्रबंधन, उपनिषदों में निहित ज्ञान, चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास से युक्त भारतीय शिक्षण पद्धति, भारतीय दर्शन की वैज्ञानिकता, वैदिक गणित, महर्षि पतंजलि प्रणीत योग जैसे अनेक विषयों का समावेश इन पाठ्यक्रमों में किया गया है।

फार्मेसी के प्रो. पाटिल बने अमेरिकन हर्बल फार्माकोपिया के समीक्षा बोर्ड के सदस्य

सागर, आचरण। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के फार्मेसी विभाग के प्रो. यू.के. पाटिल ने मिसिसिपी विश्वविद्यालय के ऑक्सफोर्ड कॉन्फ्रेंस सेंटर में 15 से 18 अप्रैल तक आयोजित औषधीय और सुगंधित पौधों पर आयोजित 7वें विश्व कांग्रेस और वानस्पतिक उत्पादों के विज्ञान पर आधारित 22वें वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया. प्राकृतिक उत्पाद अनुसंधान के लिए ऑक्सफोर्ड स्थित अमेरिकी राष्ट्रीय केंद्र के भ्रमण के बाद, प्रो. पाटिल ने वैज्ञानिको के साथ प्राकृतिक और फाइटोमेडिसिन के क्षेत्र में संभावित सहयोगात्मक अनुसंधान पर पैनल चर्चा में भी भाग लिया. भविष्य में सागर का फार्मेसी विभाग, अमेरिकी राष्ट्रीय प्राकृतिक उत्पाद अनुसंधान केंद्र के साथ अपनी अनुसंधान गतिविधियाँ आयोजित करेगा. अमेरिकन हर्बल फार्माकोपिया के समीक्षा बोर्ड के सदस्य के रूप में शामिल प्रो. यू.के. पाटिल, मोनोग्राफ बनाने में अपने विशेषज्ञ इनपुट प्रदान करेंगे. यह बहुप्रतिक्षित है कि आगामी WOCMAP-IX के मेजबान एशियाई देश होंगे. चूंकि, भारत में स्वदेशी चिकित्सा प्रणाली के अलावा औषधीय वनस्पतियां और जीव भी समृद्ध हैं, आयुर्वेद महत्व, इंडियन आयुष प्रैक्टिसेज अनुप्रयुक्त अनुसंधान परिणाम, जैव विविधता आदि हमारे सकारात्मक और सहायक कारक हैं जो हमें भारत में WOCMAP-IX के लिए इस प्रतिष्ठित होस्टिंग अवसर को प्राप्त करने में मदद करते है. प्रो. पाटिल औषधीय और सुगंधित पौधों के लिए अंतर्राष्ट्रीय परिषद के गवर्निंग ब्यूरो सदस्य के रूप में भी योगदान दे रहे है. कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता और संकाय सदस्यों ने इस उपलब्धि के लिए प्रोफेसर पाटिल को बधाई दी है।

कम्प्यूटर विज्ञान में हैं रोजगार के भरपूर अवसरः कुलपति

सागर, आचरण। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग में संचालित पाठ्यक्रम बी.सी.ए., एम.सी.ए. तथा पी.जी डिप्लोमा इन बिग डेटा एनालिटिक्स में प्रवेश प्रक्रिया CUET-UG/PG के माध्यम से होगी, बी.सी.ए. 4 वर्षीय पाठ्यक्रम जिसमें अधिकतम 75 सीटें उपलब्ध हैं इसी प्रकार 2 वर्षीय एम.सी.ए. पाठ्यक्रम में 50 सीटें उपलब्ध हैं एवं पी.जी. डी.बी.डी.ए. डिप्लोमा में अधितम 20 सीटें हैं। उपरोक्त कोर्सों में प्रवेश एन.टी.ए. द्वारा आयोजित परीक्षा CUET-UG/PG के प्राप्तांकों के आधार पर होगा। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि उपरोक्त पाठ्यक्रम छात्रों को विभिन्न सरकारी संस्थानों एवं आईटी के विभिन्न क्षेत्र जैसे, बैंकिंग, साईबर सिक्यरिटी, डेटा ऐनालिटिक्स, आरटीफीशियल इंटेलिजेन्स, बिग डेटा और मशीन लर्निंग, प्रोग्रामिंग में कैरियर बनाने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है। विश्वविद्यालय का कम्प्यूटर विज्ञान विभाग आधुनिक संरचना से युक्त एवं नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित कम्प्यूटर प्रयोगशाला, नवीनतम पुस्तकालय सुविधा सहित एवं विभिन्न संसाधन प्रदान करता है। ताकि विद्यार्थियों को शिक्षा एवं रिसर्च के लिए उत्तम गुणवत्ता पूर्ण वातावरण मिल सके। विभाग में अनुभवी शिक्षकों की टीम जो छात्रों को गुणवत्ता परक शिक्षा एवं मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। कम्प्यूटर विभाग में छात्रों के प्लेसमेंट के के लिए विभागीय स्तर एवं विश्वविद्यालय स्तर पर प्लेसमेंट सेल द्वारा कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिससे छात्रों का सीधे आईटी कंपनियों में प्लेसमेंट के अवसर प्रदान होते हैं। विगत वर्षों में विभिन्न कंपनियों जैसे इनफोसिस, टेक महिन्द्रा, बाईजूस, टीसीएस, ब्रेनडेस्क, साईबर सिक्यरिटी प्रा. लि. जस्टडाईल, ट्राईफिड रिसर्च में छात्रों का चयन हुआ है।

कॉलेजों का निरीक्षण कर विवि की कुलपति ने देखीं व्यवस्थाएं

नवभारत न्यूज

सागर 25 अप्रैल. डॉ. हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बीना के निजी कालेजों का निरीक्षण किया.

निरीक्षण के दौरान कॉलेज में विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध सुविधाओं जैसे पुस्तकालय, कंप्यूटर लेब, प्रेक्टिकल लेब, खेलकूद, साफ-सफाई, पीने का साफ पानी इत्यादि मूलभूत व्यवस्थाओं का निरीक्षण कर उनके समस्त रिकार्ड को भी चेक किया. कॉलेज के शिक्षकों की

जानकारी ली. उन्होंने कॉलेज में चल रही कक्षाओं में मौजूद विद्यार्थियों से बात कर उपलब्ध व्यवस्थाओं एवं कमियों की जानकारी ली.

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस पर विवि में हुई संगोष्ठी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस के अवसर पर डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र व समाज कार्य विभाग द्वारा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ. शिवशंकर जेना ने पंचायती राज व्यवस्था के इतिहास व विकास पर चर्चा की। कहा कि पंचायती राज व्यवस्था के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तीकरण और सामाजिक आर्थिक विकास की गति तेज हुई है। प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा कि भारत में पंचायती राज व्यवस्था का वर्तमान स्वरूप सत्ता के विकेंद्रीकरण और देश के विकास में सामाजिक सहभागिता को दर्शाता है। डॉ. कालीनाथ झा, उषा राणा, प्रियंका यादव, अमरमणि त्रिपाठी, अनुराधा शुक्ला, नेहा मालवीय, शाहरुख, प्रिया गर्ग, अर्पित, पूनम, सौरभ आदि ने विचार रखे।

दूरस्थ शिक्षा में प्रवेश को लेकर महार रेजीमेंट में हुई कार्यशाला

सागर. भारतीय सेना के अग्निवीरों, सैनिकों के परिवार, सैन्य अधिकारियों के शैक्षणिक, व्यावसायिक व तक़नीकी कौशल को विकसित करने डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय और महार रेजिमेंट केंद्र के साथ दूरस्थ शिक्षा के लिए किए गए अकादमिक समझौते के तहत पाठ्यक्रम उन्नयन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में दूरस्थ शिक्षा संस्थान के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा ने विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों, रोजगार संभावना आदि के विषय में सैनिकों को बताया। भारतीय सेना की एक इकाई के रूप में महार रेजीमेंट जहां कुशल सैनिक तैयार कर रही है वहीं एक विश्वविद्यालय के रूप में दूरस्थ शिक्षा संस्थान अपनी भूमिका का निर्वाह करते हुए उन्हें शैक्षणिक, व्यावसायिक व तकनीकी दक्षता के साथ डिग्री भी प्रदान करेंगे। कार्यशाला में पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. ज्ञानेश तिवारी ने मनोविज्ञान व निदर्शन विषयक पाठ्यक्रम, डॉ. शालिनी चौइथरानी ने वैयक्तिक प्रबंधन पाठ्यक्रम के बारे में जानकारी दी।

विश्वविद्यालयः गणित और सांख्यिकी विभाग में पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला शुरू

गणित एक ऐसा विषय है जिसके आधारभूत सिद्धांत से हर व्यक्ति परिचित होता हैः कुलपति गुप्ता

भास्कर संवाददाता|सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के गणित एवं सांख्यिकी विभाग के रामानुजन संगोष्ठी कक्ष में एप्रॉक्सीमेशन टेक्निक टू सॉल्व प्रॉब्लम इन कंप्यूटेशनल फाइनेंस विषय पर पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ शुक्रवार को हुआ। अध्यक्षता कर रहीं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा हम सब अपनी जिंदगी में एप्रॉक्सीमेशन पद्धति का उपयोग करते हैं। गणित एक ऐसा विषय है, जिसके आधारभूत सिद्धांत से हर व्यक्ति परिचित होता है। किसी भी गणितीय सूत्र में जाने के पहले हमें सबसे पहले खुद का एप्रॉक्सीमेशन करना होता है।

यह एक ऐसी पद्धति है जिसमें हम अपनी क्षमता, कार्यकुशलता, ऊर्जा का आंकलन करते हुए कार्य की सफलता के बारे में अनुमान लगाते हैं। इसी की गणितीय पद्धति एप्रॉक्सीमेशन है। यह आज के समय का ज्वलंत और उभरता हुआ विषय क्षेत्र है जिस पर दुनिया के बहुत सारे विशेषज्ञ कार्य कर रहे हैं। भविष्य में क्या घटित होगा, यह इसका आंकलन है। इसमें गणित, भौतिक शास्त्र, कंप्यूटर साइंस, सांख्यिकी, डाटा साइंस जैसे ज्ञान-विज्ञान के कई अनुशासनों का समावेश है। इस पद्धति से कई सॉफ्टवेयर भी विकसित किए जा रहे हैं। मुख्य अतिथि यूनिवर्सिटी ऑफ द वेस्टर्न केप साउथ अफ्रीका के प्रो. के पाटीदार ने कहा यह एक ऐसा विषय है जिसमें कई तरह के विषयों का समावेश है'। इस सिद्धांत में डाटा कलेक्शन, डाटा सेट्स, सांख्यिकी जैसे चीजों का उपयोग किया जाता है तब जाकर हम इसके अनुप्रयोग पर कार्य कर सकते हैं।

एआई के जमाने में इस विषय का महत्व बढ़ गया हैः प्रो. वर्मा

विशिष्ट अतिथि आईआईटी इंदौर की डॉ. देवोप्रिया मुखर्जी ने कहा कि इस विषय पर चर्चा 1950 के दशक से ही शुरू हो गई थी लेकिन कम्प्यूटर विज्ञान के आगमन के बाद 2014 और 2020 में इस विषय पर गहराई से अध्ययन किया गया। आज यह सबसे आवश्यक विषय बन गया है। भौतिक शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. आशीष वर्मा ने कहा इस सिद्धांत को आगे बढ़ाने में कई भौतिक शास्त्रियों का भी योगदान है। आज आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के जमाने में इस विषय का महत्व और अधिक बढ़ गया है। स्वागत भाषण में विभागाध्यक्ष प्रो. दिवाकर शुक्ला ने पांच दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की। संचालन शिवानी खरे ने किया।

मलेशिया, स्कॉटलैंड, वेस्टइंडीज के प्रतिभागी ले रहे हिस्सा

अधिष्ठाता प्रो. आरके गंगेले ने बताया कार्यशाला में देश-विदेश के 100 से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीयन कराया है। इनमें मलेशिया, स्कॉटलैंड, वेस्टइंडीज के अलावा देश के प्रमुख संस्थानों से प्रतिभागी हिस्सा लेंगे। यह कार्यशाला हाइब्रिड मोड मे की जा रही है। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों में मैथमेटिकल फाइनेंशियल मॉडलिंग की विशेष ट्रेनिंग दी जानी है। इस मौके पर प्रो. पीके कठल, प्रो. एपी मिश्रा, प्रो. रणवीर कुमार, प्रो. राजेश गौतम, प्रो. अजीत जायसवाल, डॉ. अभिषेक बंसल, डॉ. आरके पांडेय आदि मौजूद थे। डॉ. शैलेश चौबे के निर्देशन में विद्यार्थियों ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की।

आयोजन पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला के उदघाटन सत्र में बोलीं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

गणित के नवाचारी शोध कर रहे हैं समस्याओं का समाधान

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागरः डा हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के गणित एवं सांख्यिकी विभाग के रामानुजन संगोष्ठी कक्ष में एप्राक्सीमेशन टेक्निक टू साल्व प्राब्लम इन कंप्यूटेशनल फाइनेंसज विषय पर पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला शुक्रवार से शुरू हुई। उदघाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता थीं। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि यूनिवर्सिटी आफ द वेस्टर्न केप साउथ अफ्रीका के प्रो के पाटीदार, विशिष्ट अतिथि आईआईटी इंदौर की डा. देवोप्रिया मुखर्जी, अधिष्ठाता प्रो आरके गंगेले, भौतिक शास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो. आशीष वर्मा, गणित एवं सांख्यिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो. दिवाकर शुक्ला थे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि हम सब अपनी जिंदगी में एप्राक्सीमेशन पद्धति का उपयोग करते हैं। गणित एक ऐसां विषय है, जिसके आधारभूत सिद्धांत से हर व्यक्ति परिचित होता है। किसी भी गणितीय सूत्र में जाने के पहले हमें सबसे पहले खुद का एप्राक्सीमेशन करना होता है। यह एक ऐसी पद्धति है, जिसमें हम अपनी क्षमता, कार्यकुशलता, ऊर्जा का आंकलन करते हुए कार्य की सफलता के बारे में अनुमान लगाते हैं। इसी की गणितीय पद्धति एप्राक्सीमेशन है। यह आज के समय का ज्वलंत और उभरता हुआ विषय क्षेत्र है। जिस पर दुनिया के बहुत सारे विशेषज्ञ कार्य कर रहे हैं, क्योंकि यह भविष्य में क्या घटित होगा, इसका आंकलन है। इसमें गणित, भौतिक शास्त्र, कम्प्यूटर साइंस, सांख्यिकी, डाटा साइंस जैसे ज्ञान-विज्ञान के कई अनुशासनों का समावेश है। इस पद्धति से कई साफ्टवेयर भी विकसित किये जा रहे हैं। आज गणित के नवाचारी शोध दुनिया की कई जटिल समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। इस कार्यशाला में सम्मिलित होने विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए यह एक सुनहरा अवसर है कि वह इस क्षेत्र में कार्य करते हुए अपना बेहतर योगदान दें।

गणित और सांख्यिकी विभाग में कार्यशाला में उद्बोधन देतीं कुलपति। ● नवदुनिया

मुख्य अतिथि प्रो. पाटीदार ने कहा कि किसी भी समस्या के समाधान और परिणाम का आंकलन करते हुए उसकी पद्धति विकसित करना सबसे कठिन एवं चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस सिद्धांत में डाटा कलेक्शन, डाटा सेट्स, सांख्यिकी जैसे चीजों का उपयोग किया जाता है, तब जाकर हम इसके अनुप्रयोग पर कार्य कर सकते हैं। विशिष्ट अतिथि डा. देवोप्रिया मुखर्जी ने कहा कि इस विषय पर चर्चा 1950 के दशक से ही शुरू हो गई थी, लेकिन कम्प्यूटर विज्ञान के आगमन के बाद 2014 और 2020 में इस विषय पर गहराई से अध्ययन किया गया। इस अवसर पर प्रो. पीके कठल, प्रो. एपी मिश्रा, प्रो. रणवीर कुमार, प्रो. अजीत जायसवाल, डा. अभिषेक बंसल, डा. आरके पांडेय सहित कई शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

पार्क में दस दिवसीय योग शिविर शुरू

जिला अस्पताल के पास पार्क में योग करातीं योग विभाग की छात्रा समीक्षा तिवारी। ● नवदुनिया

सागर। डा. हरी सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के योग विभाग की छात्राओं द्वारा जिला अस्पताल के पास स्थित डा. धगट पार्क में दस दिवसीय योग शिविर का आयोजन किया। शिविर के पहले दिन आरएमओ डा. अभिषेक ठाकुर सहित अन्य लोग शामिल हुए।

योग विषय की छात्रा समीक्षा तिवारी ने योग की क्रियाएं कराईं। उन्होंने कहा कि यदि निरोग रहना चाहते हो तो योग से नाता जोड़ो।

इस कार्यक्रम में उनकी सहयोगी कामिनी चौबे व प्रियल ने योग शिविर में सहायता की।

SagarUniversity DoctorGour Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya,Sagar

संकलन, चयन एवं संपादन

कार्यालय, जनसंपर्क अधिकारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)